कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-

त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798

Qku (dk-) : +91(11) 23381428

QDl : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

आवरण कथा : मैसूर में ''विजय संकल्प समावेश''

कर्नाटक में भाजपा के चुनाव अभियान की शुरूआत............................... 7

संसद में बहस :

राष्ट्रपति अभिभाषण पर चर्चा

श्री राजनाथ सिंह... 9

श्री अरुण जेटली.. 11

रेल बजट पर चर्चा

श्री प्रभात झा.. 27

भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं परिषद बैठक

आर्थिक प्रस्ताव... 15

श्री लालकृष्ण आडवाणी का मार्गदर्शन.. 22

लेख

भाजपा स्थापना दिवस (6 अप्रैल) पर विशेष

भाजपा मात्र राजनैतिक दल नहीं अपितु एक जनांदोलन है

– **प्रभात झा**.. 25

इटली झुका, पर मनमोहन सरकार की देश-विदेश में किरकिरी हुई

– **अम्बा चरण वशिष्ठ**.. 28

राज्यों से

मध्य प्रदेश.. 13

राजस्थान... 29

बिहार.. 30

मुख्य पृष्ठ : *मैसूर (कर्नाटक) में ''विजय संकल्प समावेश''*

ऐतिहासिक चित्र

30 जून 1965 को कच्छ बचाओ आन्दोलन के दौरान पं. दीनदयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री केदारनाथ साहनी एवं अन्य

दया धर्म का मूल

महाराज युधिष्ठिर समय-समय पर ऋषियों के आश्रम में पहुंचकर उनसे सत्संग किया करते थे। एक बार वह महर्षि मार्कण्डेय जी के दर्शन के लिए पहुंचे। उन्होंने महामुनि से प्रश्न किया, 'सर्वोत्तम धर्म और सर्वोत्तम ज्ञान क्या है?'

महर्षि ने बताया, "आनृशंस्यं परो धर्मः क्षमा च परमं बलं। आत्मज्ञानं परं ज्ञानं सत्यं व्रत परं व्रतम्। यानी,

"क्रूरता का अभाव अर्थात दया सबसे महान धर्म है। क्षमा सबसे बड़ा बल है। सत्य सबसे उत्तम व्रत है और परमात्मा के तत्व का ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है।"

जो व्यक्ति सांसारिक वस्तुओं में सुख न खोजकर परमात्मा को ही सुख का स्रोत मानकर सत्कर्मों व भक्ति में लगा रहता है, वह न कभी दुखी होता है और न ही निराश। अतः हृदय में दया व करुणा की भावना रखने वाला ही सबसे बड़ा धर्मात्मा और ज्ञानी है।

मुनि मार्कण्डेय युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं, 'राजन् तुम सभी प्राणियों को भगवान का स्वरूप मानकर उन पर दया करते रहो। जितेंद्रिय और प्रजा पालन में तत्पर रहकर धर्म का आचरण करो। यदि प्रमादवश तुमसे किसी के प्रति कोई अनुचित व्यवहार हो गया, तो उसे अपने विनम्र व्यवहार से संतुष्ट कर दो।'

अहंकार को पतन का कारण बताते हुए मुनि कहते हैं, 'मैं सबका स्वामी हूं'- ऐसा अहंकार कभी पास न आने देना। अपने को स्वामी नहीं सेवक समझने से ही राजा का कल्याण होता है। जो व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्त होकर सब के कल्याण की कामना करता है, उसके कल्याण के लिए स्वयं प्रभु भी तत्पर रहते हैं।'

- संकलन : शिवकुमार गोयल,
अमर उजाला से साभार

व्यंग्य चित्र

प्रिय पाठकगण

कमल संदेश (पाक्षिक) हिन्दी/अंग्रेजी का अंक आपको नियमित मिल रहा होगा। यदि किन्हीं कारणवश आपको अंक प्राप्त न हो रहा हो तो आप अपने प्रदेश कार्यालय को या हमें अवश्य सूचित करें।

-सम्पादक

परिवर्तन की जन-छटपटाहट को हमें समझना होगा

समाधकीय

व्यक्ति कालाबाजारी करता है। यह तो सदैव से सुनते आ रहे हैं। उसके बाद बात चली 'अरे नेता लोग भी कालाबाजारी' करते हैं। यहां तक भी ठीक क्योंकि नेता भी तो आदमी ही होता है। पर यह सुनकर सभी को आश्चर्य लग रहा है कि कुछ राजनीतिक दल कांग्रेस को सत्ता में बने रहने के लिए उनके साथ कालाबाजारी करते हैं। कालाबाजारी यानी सिर्फ रुपए-पैसे का सवाल नहीं है बल्कि अपने ही सिद्धांतों के साथ कालाबाजारी। राजनीति का यह काला अध्याय आजादी से लेकर अब तक के दौर में पूर्व में कभी नहीं देखा गया।

जब राजनीतिक दल अपने ही दल के नीति-सिद्धांतों से कालाबाजारी करेंगे तो वे देश को क्या परोसेंगे? कालाबाजारी का यह काला अध्याय बंद करने का पुनीत अवसर देश को मिलने वाला है। कालाबाजारी के चलते बची हुई कांग्रेसनीत यूपीए सरकार अंतिम सांसें गिन रही है। हालांकि कांग्रेसियों से कोई पूछे तो वे नहीं मानेंगे। पूरा देश वर्तमान में कांग्रेस को सत्ता से धकियाने के लिए तैयार बैठा है। सवाल यहां यह उठता है कि कांग्रेस का जाना तो तय है पर क्या हम उस स्थान पर आने की तैयारी में प्राणपन से जुट गए हैं? यह आपातकाल जैसा ही अवसर है जब जनता पार्टी-जिसे समय के तकाजे ने गठित किया था और देश ने लोकतंत्र की लाज-जनता पार्टी को सौंपकर और इंदिरा गांधी को हटाकर बचाई थी।

इस ऐतिहासिक अवसर को हमें नहीं चूकना है। अपने-अपने स्थान पर सबको लोकतंत्र के उत्सव के लिए उत्सवी मन से तैयार होना होगा। समय कम है। लक्ष्य बड़ा है। 'कम समय में ज्यादा काम-भाजपा की है पहचान' हमें इस वाक्य को चरितार्थ करना होगा। शीर्षस्थ और नैतिक नेतृत्व में हम अन्य दलों से आगे हैं। कर्म और कर्मयोगी कार्यकर्ताओं की दृष्टि से भी हमारा मुकाबला कोई अन्य दल नहीं कर सकता। फूल चढ़ाया जा सकता है पर यदि उसे माला के रूप में पहनाना है तो उसे एक धागे में पिरोना होगा। फूल का अपना महत्व है पर माला पिरोने के लिए धागे की तलाश, सूई सी कठोरता, पिरोने का भाव, स्वयं न पहनने की इच्छा, अगर हम सब लोगों ने धारण कर ली, तो 2013 और 2014 के चुनाव में जीत का वरण भाजपा के गले में ही होगा।

कर्नाटक हमारी परीक्षा 5 मई को लेगा। दक्षिण का जब द्वार खुला और जब हम कर्नाटक में विजयी हुये थे तो हर राज्य के कार्यकर्ताओं ने अपनी पार्टी की पहली दक्षिणी राज्य की विजय पर अपने-अपने राज्य में दीपमालिका बनाकर दक्षिण की नवज्योति का हृदय से स्वागत किया था। मिठाइयां बांटी थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी और दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। कर्नाटक की जीत ने हमारी अखिल भारतीय स्वरूप को मान्यता दी थी। आज वह समय नहीं है कि हम कर्नाटक में घटित घटनाओं की चर्चा करें पर ऐसा समय जरूर है कि हम सभी लोग मिलकर कर्नाटक में भाजपा का परचम पुनः कैसे फहराएं, इसमें तन-मन-धन से जुटें।

कांग्रेस कमर के नीचे वार करने से नहीं चूकती। डीएमके ने समर्थन वापस लिया और अगले ही दिन सीबीआई ने छापा मारा। मजेदार मामला है कि छापा पड़वाकर प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री कहते हैं- ''यह ठीक नहीं हुआ।'' कांग्रेस का यह चरित्र देश समझ गया है। राजनीति के इस डरा-धमकाकर समर्थन लेने की नव-प्रथा को रोकना होगा। यह रूकेगा तब जब हम ''जन-जन का बल-खिलता कमल'' को बनाएंगे। आनेवाला एक वर्ष जहां भारत की राजनीति का भाग्य तय करेगा वहीं भाजपा का भी भाग्य तय होगा? मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में हमें पुनः आने की संभावना से कांग्रेसी भी

इनकार नहीं करते। राजस्थान में सब कुछ ठीक रहा तो वहां की ''वसुंधरा'' पर वसुंधरा जी को कमल खिलने से कोई रोक नहीं सकता। बात रही दिल्ली और झारखंड की तो यहां पर केन्द्रीय नेतृत्व को पुरजोर ध्यान देना होगा। जनता- इन दोनों स्थानों पर कांग्रेस को नहीं चाहती है पर सवाल यह उठता है हम आना चाहते हैं या नहीं ?

सत्ता के गलियारों में यह बात भी बहुत जोरों से चल रही है कि कर्नाटक के बाद कांग्रेसनीत यूपीए नवम्बर में ही लोकसभा के चुनाव संभावित विधानसभा चुनाव के साथ संपन्न करा देगी। हमें इन सभी परिस्थितियों पर पैनी नजर रखनी होगी। हम सभी अच्छे मन से लग गए तो एकात्ममानव दर्शन जिस तरह से भाजपा शासित राज्यों में दर्शित हो रहा है वह पूरे देश में भी दर्शित होने लगेगा। गुजरात में जिस तरह से कांग्रेस लुप्त होती जा रही है वैसे तो पांचवीं बार और नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनाकर प्रदेश ने देश को संदेश दिया है कि हमें सरकार भी चलाना आता है और एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीसरी बार भी सरकार में आना आता है। हम सभी को देश की मानसिकता के सत्कार करने के लिए जी-जान से जुटना होगा। देश कांग्रेस से मुक्ति चाह रहा है। घटिया राजनीति से अब मन भर चुका है पर हमें अपने कार्य से परिश्रम से और इच्छाशक्ति से जन-जन में यह विश्वास दिलाना होगा कि यूपीए का कोई विकल्प है तो वह एनडीए ही है। ●

नये प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

रवीन्द्र राय बने झारखण्ड भाजपा अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 11 मार्च 2013 को श्री रवीन्द्र राय को झारखण्ड प्रदेश भाजपा का अध्यक्ष नियुक्त किया। नवनियुक्त अध्यक्ष ने 17 मार्च को रांची स्थित प्रदेश कार्यालय में पार्टी का दायित्व प्रदेश अध्यक्ष के नाते सम्भाला। कार्यभार सम्भालने से पहले श्री राय ने पं. दीनदयाल उपाध्याय और बिरसा मुण्डा को पुष्पांजलि दी।

के.वी. सिंह देव उड़ीसा भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 11 मार्च को श्री कनक वर्धन सिंह देव को उड़ीसा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। श्री सिंह देव पटनागढ़ से चार बार विधायक निर्वाचित हुए हैं। वर्तमान में वह उड़ीसा विधानमण्डल में भाजपा के नेता हैं। उन्होंने यह पदभार श्री जुएल ओराम से ग्रहण किया। जुएल ओराम के तीन वर्ष का कार्यकाल दिसम्बर महीने में समाप्त हो चुका था।

प्रहलाद वी. जोशी बने कर्नाटक भाजपा के नए अध्यक्ष

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 21 मार्च 2013 को श्री प्रह्लाद वी. जोशी को कर्नाटक भाजपा का नया अध्यक्ष नियुक्त किया। श्री प्रह्लाद जोशी कर्नाटक के धारवाड़ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद हैं।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती (14 अप्रैल) पर उन्हें शत-शत नमन!

कर्नाटक में भाजपा के चुनाव अभियान की शुरूआत

भाजपा पांच वर्ष का विकास प्रगति कार्ड लेकर लोगों का समर्थन मांगेगी : जगदीश शेट्टार

हमारे संवाददाता द्वारा

भारतीय जनता पार्टी ने 22 मार्च को मैसूर में एक भव्य रैली का आयोजन कर कर्नाटक के विधान सभा चुनावों की शुरूआत कर दी। मैसूर में ''विजय संकल्प समावेश'' में मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेट्टार, भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार, पूर्व मुख्यमंत्री श्री डी.वी. सदानंद गौड़ा और उपमुख्यमंत्री श्री के.एस. ईश्वरप्पा के साथ-साथ अन्य नव-नियुक्त प्रदेशाध्यक्ष श्री प्रह्लाद जोशी जैसे कई वरिष्ठ नेतागण उपस्थित थे। इससे पूर्व मैसूर में मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेट्टार ने अभियान की शुरूआत चामुण्डेश्वरी में पूजा-अर्चना से की। रैली को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने सफलतापूर्वक अपना कार्यकाल पूरा किया है और भाजपा फिर स्पष्ट बहुमत लेकर सत्ता में आएगी। उन्होंने बताया कि राज्य में चुनाव अभियान के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को आमंत्रित करेंगे।

उन्होंने कहा कि पार्टी के लोगों के पास कर्नाटक में ''विकास के पांच वर्ष के प्रगति कार्ड'' को लेकर जाएगी। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टियों तथा कुछेक ऐसे लोग, जो भाजपा से अलग हो गए, उन्होंने उनके नेतृत्व में चल रही भाजपा सरकार को उखाड़ने की कोशिश की, परन्तु वे सफल नहीं हुए। श्री शेट्टार ने भरपूर विश्वास के साथ कहा कि भाजपा को पिछले चुनावों में जीतीं 110 सीटों से भी अधिक सीटें मिलना निश्चित है।

नव-नियुक्त भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री प्रह्लाद जोशी ने ''दिशाहीन नौका'' वाली कांग्रेस की तुलना की और कहा

2008 के कर्नाटक चुनाव परिणाम

दलगत स्थिति

	सीटें लड़ीं	सीटें जीतीं	वोट प्रतिशत	
भाजपा	224	110	33.3	33.36
आईएनसी	222	80	34.38	34.08
जेडी (एस)	219	28	19.27	18.84
आईएनडी	943	6	6.81	
बीएसपी	217	0	2.80	2.70

कि केजेपी का कोई अस्तित्व है ही नहीं। उन्होंने कहा कि केजेपी को मत देने का मतलब कांग्रेस को मदद करना है। श्री प्रह्लाद जोशी ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपको ध्यान होगा कि हाल में हुए स्थानीय नगरीय चुनावों (यू.एल.बी) में पूर्व मुख्यमंत्री येदियुरप्पा द्वारा संचालित कर्नाटक जनता पार्टी ने 147 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक भी सीट पर सफलता प्राप्त नहीं की थी।

जोशी जी का कहना था कि लोग महसूस कर रहे हैं कि केजेपी और पूर्व भाजपा मंत्री श्री बी.एस. श्रीरामुलु की बीएसआर कांग्रेसी जैसी छोटी-छोटी पार्टियों को, जिन्हें यूएलबी चुनावों में बहुत ही थोड़े से मत प्राप्त हुए थे, मत देने का मतलब मतों को 'व्यर्थ' करना है और भाजपा इस संदेश को मतदाताओं के हर वर्ग तक पहुंचाने की कोशिश करेगी।

कोप्पा के समारोह में देवी श्रृंगेरी शारदाम्बे हर तरफ छायी हुई थी। विधायक श्री श्रृंगेरी और खाद्य तथा नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री डी एन जीवराज ने, जिन्होंने कार्यक्रम का आयोजन किया, सम्मेलन स्थल पर ही शारदाम्बा की विशेष प्रार्थना-अर्चना की व्यवस्था की हुई थी। देवी की मूर्ति को एक विशेष काष्ठ आकृति में तैयार कर रखा गया था। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार, उप-मुख्यमंत्री श्री के.एस. ईश्वरप्पा और पूर्व मुख्यमंत्री श्री डी.वी. सदानंद गौड़ा ने कार्यक्रम के आरम्भ में प्रार्थना की। मैसूर में नेतागण कोप्पा में पहुंचने शुरू हो गए थे, जहां उन्होंने विजय संकल्प रैली में बड़े उत्साह से भाग लिया।

भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार ने कहा कि ''जहां मैसूर चामुण्डेश्वरी का स्थल है, वहीं श्रृंगेरी शारदाम्बे का गृह है।'' उच्च शिक्षा मंत्री श्री सीटी रवि ने महिला मतदाताओं से अपील की कि वे शारदाम्बे के पवित्र स्थल पर शक्तिशाली महिलाओं का रूप धारण कर भाजपा को अपना समर्थन दें। ●

वर्ष 2010 के लिए अरुण जेटली बने सर्वश्रेष्ठ सांसद

वरिष्ठ भाजपा नेता राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली को 'उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार' के लिए चुना गया है जिसकी घोषणा 6 मार्च को की गई। श्री जेटली को यह पुरस्कार वर्ष 2010 के लिए दिया गया है। भारतीय संसद समूह ने इस पुरस्कार की शुरुआत 1994 में की थी, जिसे प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने तीन वर्षों (2010-2012) के लिए एवार्ड सदस्य चयन समिति का गठन किया था। भारतीय संसद समूह की कार्यकारी समिति ने 5 मार्च को आयोजित अपनी बैठक में पुरस्कार समिति की सिफारिशों को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। उनके साथ ही कांग्रेस नेता श्री कर्ण सिंह एवं जदयू नेता श्री शरद यादव को क्रमश: 2011 और 2012 के उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार के लिए चुना गया है।

समिति द्वारा संस्तुतित एवं कार्यकारी समिति द्वारा स्वीकृत ''आऊटस्टैण्डिंग पार्लियामेंट्रियन'' का एवार्ड 1995 से प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव 5 मई को

कर्नाटक के विधानसभा चुनाव एक ही चरण में 5 मई को होंगे और वोटों की गिनती 8 मई को होगी। 21 मार्च 2013 को इसकी घोषणा चुनाव आयोग ने की है। एक ही चरण में चुनाव तिथियों की घोषणा करते हुए सम्पूर्ण चुनाव आयोग ने दिल्ली में आयोजित एक प्रेस सम्मेलन में कहा है कि 224 सदस्यों की कर्नाटक विधान मण्डल का कार्यकाल 3 जून को समाप्त हो रहा है। आयोग ने कहा कि एक चरण में चुनाव का निर्णय लेते हुए केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा सुरक्षा की व्यवस्था और राज्य की स्थानीय पार्टियों की सुविधा को ध्यान में रखा गया है।

इस राज्य का पिछला विधानसभा चुनाव तीन चरणों में किया गया था। राज्य के 224 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से अनु. जाति के लिए 36 सीटें तथा अनु. जनजाति के लिए 15 सीटें आरक्षित हैं। कर्नाटक में 4.18 करोड़ मतदाता हैं और चुनाव के लिए 50,446 मतदाता केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री सम्पत के साथ निर्वाचन आयुक्त श्री एच.एच. ब्रह्मा और श्री एस.एन.ए. ज़ैदी भी प्रेस सम्मेलन में शामिल थे और उन्होंने बताया कि ''आदर्श आचार संहिता तुरंत लागू हो गई है।'' चुनावों का समय प्रात: 8 बजे से सायं 5 बजे तक रहेगा और इन चुनावों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का प्रयोग होगा। ●

राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा

अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की साख गिरी : राजनाथ सिंह

लोकसभा में राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर 27 फरवरी को हुई चर्चा के दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने यूपीए पर प्रहार करते हुए कहा कि इस सरकार के पास देश की समस्याओं, मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए न तो दिशा है, न दृष्टि है, न संकल्प है और न इच्छाशक्ति है। हम यहां उनके भाषण का सारांश प्रकाशित कर रहे हैं :-

सबसे पहले मैं महामहिम राष्ट्रपति के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने पहली बार सदन के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को सम्बोधित किया है। राष्ट्रपति के अभिभाषण से जनता कुछ अपेक्षा रखती है क्योंकि यह सरकार के कामकाज, संकल्प और इरादों का यह एक दस्तावेज है। इस वर्ष 2012-13 के वित्तीय वर्ष में एग्रीकल्चर की ग्रोथ रेट केवल 1.8 परसेंट रही है। फूड ग्रेन का उत्पादन तेजी के साथ बढ़ रहा है पर किसानों को उपज की उचित कीमत नहीं मिल पा रही है। हम यदि भारत को धनवान भारत बनाना चाहते हैं तो हमें यह संकल्प करना होगा कि हम भारत को विश्व की कृषि राजधानी बनायेंगे। भारत को दुनिया के डेवलप्ड कंट्रीज की पंक्ति में लाने के लिए 60-65 फीसदी से अधिक रोजगार के नए अवसर केवल कृषि क्षेत्र में सृजित करने होंगे। आवश्यक यह है कि इस संबंध में एक स्पेशल सैशन बुलाया जाना चाहिए और एक इंटिग्रेटिड एक्शन प्लान तैयार किया जाना चाहिए। इस बार के राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में फूड सिक्योरिटी बिल लाए जाने और उसे पास किए जाने की बात कही गई है। एनडीए सरकार के समय में अंत्योदय योजना प्रारंभ की गई थी। 2009 में यह कहा गया था कि सौ दिनों के अंदर ही फूड सिक्योरिटी बिल लाया जाएगा। चार वर्षों से गरीबों के दर्द को दूर करने की सरकार के पास जो विल पावर चाहिए, वह विल पावर नहीं है। छत्तीसगढ़ में खाद्य सुरक्षा को पूरी तरह से सुनिश्चित कर दिया गया है। सरकार को भी एक बार उस राज्य के द्वारा जो खाद्य सुरक्षा की योजना बनाई गई है, उसे देखना चाहिए। किसानों को उनकी उपज और उत्पाद की उचित कीमत मिलनी चाहिए। इस अभिभाषण में सूखे और ओले की चर्चा नहीं की गई है। इसकी चर्चा की जानी चाहिए थी, क्योंकि यह तात्कालिक विषय है। मैं जब सूखे की चर्चा कर रहा था तो मुझे अटल बिहारी वाजपेयी जी की जो इंटरलिंकिंग ऑफ रिवर्स की योजना थी, वह याद आयी। विश्व के दूसरे देशों के वैज्ञानिक भी यह करने लगे थे कि यदि सारे हिन्दुस्तान की नदियां एक दूसरे से जोड़ दी जाएं तो सूखे की समस्या से हिन्दुस्तान

सरकार ने ''समाजवाद'' शब्द-संविधान की आत्मा. को भी पूरी तरह से भुला दिया है। इस हुकूमत ने सबसे ज्यादा फायदा व्यावसायिक घरानों को पहुंचाया है। गरीबी और रोजगार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पिछले वर्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण में सरकार ने दावा किया था कि अर्थव्यवस्था बड़ी तेजी से गति पकड़ रही है और जीडीपी की वृद्धि दर 8-9 प्रतिशत होगी। योजना आयोग कह रहा है कि वृद्धि दर 5 प्रतिशत है। यदि जीडीपी की विकास दर नहीं बढ़ेगी तो गरीबी और बेरोजगारी की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। देश की अर्थव्यवस्था में गिरावट के लिए सरकार की गलत आर्थिक नीतियां और गलत आर्थिक नियोजन जिम्मेदार है।

को काफी हद तक निजात मिल जाएगी। मैं प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करुंगा कि कृपया यह बतलायें कि इंटरलिंकिंग ऑफ रिवर्स की इस समय स्टेटस रिपोर्ट क्या है? महंगाई को कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स से देखा जाना चाहिए। पहली बार इस सरकार के शासनकाल में ऐसा हुआ है कि ग्रोथ रेट, रेट ऑफ इंलेशन की हाफ रही है। पेट्रोल, डीजल को डी-रेग्युलेट किया गया है और रेल बजट को भी मार्केट के साथ लिंक कर दिया गया है। जैसे-जैसे महंगाई बढ़ेगी, रेलवे टिकट का किराया भी बढ़ेगा। सरकार ने खाद और गैस सिलेन्डर की सब्सिडी भी कम कर दी। देश की कृषि सब्सिडी के बिना बच नहीं सकती। भारत एक कल्याणकारी राज्य है इसलिए सब्सिडी की व्यवस्था की गई। सरकार ने ''समाजवाद'' शब्द-संविधान की आत्मा- को भी पूरी तरह से भुला दिया है। इस हुकूमत ने सबसे ज्यादा फायदा व्यावसायिक घरानों को पहुंचाया है। गरीबी और रोजगार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

जब तक पाक प्रायोजित आतंकवाद नहीं रुकेगा, भारत को पाकिस्तान से कोई बातचीत नहीं करनी चाहिए। श्रीलंका के राष्ट्रपति ने आश्वासन दिया था कि तमिल मूल के लोगों को आवश्यक सुरक्षा और सुविधा मुहैया कराएंगे और उन्हें कुछ राजनैतिक अधिकार भी देंगे। इसकी जानकारी मैं चाहूंगा। अफगानिस्तान के साथ हमारे रिश्ते सुदृढ़ होंगे। इस सरकार के पास देश की समस्याओं, मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए न तो दिशा है, न दृष्टि है, न संकल्प है और न इच्छा शक्ति है।

पिछले वर्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण में सरकार ने दावा किया था कि अर्थव्यवस्था बड़ी तेजी से गति पकड़ रही है और जीडीपी की वृद्धि दर 8-9 प्रतिशत होगी। योजना आयोग कह रहा है कि वृद्धि दर 5 प्रतिशत है। यदि जीडीपी की विकास दर नहीं बढ़ेगी तो गरीबी और बेरोजगारी की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। देश की अर्थव्यवस्था में गिरावट के लिए सरकार की गलत आर्थिक नीतियां और गलत आर्थिक नियोजन जिम्मेदार है।

गाजियाबाद एन॰एच॰ 24 और एन॰एच॰ 58 के बारे में माननीय प्रधानमंत्री जी का भी ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। यहां इतना जाम रहता है कि यहां से गाजियाबाद की 15 किलोमीटर की दूरी तय करने में दो-तीन घंटे लग जाते हैं। 7-8 वर्षों से आश्वासन की घुट्टी पिलायी जा रही है।

मैं प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि इस ओर विशेष रूप से ध्यान दें। पिछले अभिभाषण में यह लक्ष्य रखा गया था कि 25 प्रतिशत विनिर्माण क्षेत्र का जी॰डी॰पी॰ में योगदान होगा। आज यह 11 से 12 फीसदी है। सभी क्षेत्रों में हालात पहले से ज्यादा बदतर हुए हैं। इसमें सुधार के लिए बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना होगा तथा ब्याज दर को कम करना होगा। विद्युत क्षेत्र की हालत बहुत खराब है। भ्रष्टाचार चाहे आकाश हो, पाताल हो या घरती हो उससे सारा देश अवगत है। ''क्रॉनी कैपटलिज्म'' की चर्चा अब धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगी है। सी॰बी॰आई॰ बहुत दिनों से 35 फाइलों की मांग कर रही है लेकिन उसे उपलब्ध नहीं कराया गया है। नवीकरणीय ऊर्जा पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पारदर्शिता के अभाव में अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की साख गिरी है। हेलिकॉप्टर घोटाले में 360 करोड़ रुपया किसे दिया गया? बड़े रक्षा सौदों को संसद के संज्ञान में लाया जाए। किसानों के 70,000 करोड़ रुपए का कर्ज जो माफ हुआ था उसकी सी॰बी॰आई॰ जांच होनी चाहिए। यदि सारे घोटालों की रकम को जोड़ दें तो अल्पविकसित देशों का जो कुल बजट है वह उससे ज्यादा होगा। भारत का लगभग 25 लाख करोड़ का कालाधन दूसरे देशों में जमा है।

भारतीय जनता पार्टी और अन्य कई राजनीतिक दल पूरी तरह से तेलंगाना राज्य बनने के पक्षधर हैं। इस संबंध में हम सरकार के कदम का समर्थन करेंगे। चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर डैम बना रहा है।

मैं प्रधान मंत्री जी से यह अनुरोध करुंगा कि इसकी गंभीरता को यह सरकार समझे। तिस्ता जल बंटवारे के बारे में प्रधान मंत्री को अन्य दलों के साथ भी परामर्श करना चाहिए। जब तक पाक प्रायोजित आतंकवाद नहीं रुकेगा, भारत को पाकिस्तान से कोई बातचीत नहीं करनी चाहिए।

श्रीलंका के राष्ट्रपति ने आश्वासन दिया था कि तमिल मूल के लोगों को आवश्यक सुरक्षा और सुविधा मुहैया कराएंगे और उन्हें कुछ राजनैतिक अधिकार भी देंगे। इसकी जानकारी मैं चाहूंगा। अफगानिस्तान के साथ हमारे रिश्ते सुदृढ़ होंगे। इस सरकार के पास देश की समस्याओं, मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए न तो दिशा है, न दृष्टि है, न संकल्प है और न इच्छा शक्ति है। ●

राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा

यूपीए में विश्वनीयता का अभाव : जेटली

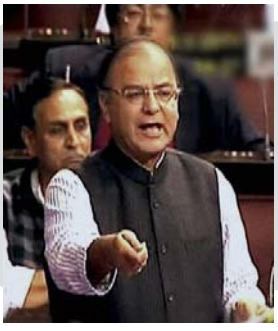

गत 6 मार्च को राज्यसभा में राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई चर्चा के दौरान राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने संप्रग पर चौतरफा हमले करते हुए कहा कि आज देश में निराशा का माहौल है। भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। आतंकी हमले हो रहे हैं। विकास दर धीमी हो गई है। यूपीए को आत्मविश्लेषण करना चाहिए कि क्या उसके शासन का तरीका विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए उचित है या नहीं? हम यहां श्री जेटली के भाषण का सारांश प्रकाशित कर रहे हैं :-

नौ वर्षों का समय किसी भी सरकार के लिए देश में अपनी छाप छोड़ जाने का एक लम्बा अवसर होता है। सरकारें इस अवसर का प्रयोग करके देश की दिशा भी बदल देती हैं और प्रगति की नीति को भी तेज कर देती हैं। लेकिन आज हम पीछे मुड़कर देखें तो लगता है कि जिस सरकार ने विरासत में 8.4 प्रतिशत विकास दर प्राप्त की थी, वह हो सकता है कि 5 प्रतिशत से भी कम विकास दर छोड़ कर जाए।

आज निराशा का माहौल है। मैं मानता हूं कि संप्रग को आत्मविश्लेषण करना होगा कि क्या संप्रग के शासन का तरीका विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए उचित है या नहीं है? जब भ्रष्टाचार के मामलों में वृद्धि हो रही होती है तो सरकार की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। इसके परिणामस्वरूप देश के लोगों और विश्व का सरकार के प्रति रवैया बदल गया है।

देश को विकास की जरूरत है। हमें अगले 10-20 वर्षों तक लगातार 8-10 प्रतिशत की विकास दर हासिल करनी होगी केवल तभी हम देश की समस्याओं को सुलझा पाएंगे। जब आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि होती है तो रोजगार के अवसर में भी वृद्धि होती है। सरकार को राजस्व मिलता है। सरकार उस राजस्व से बुनियादी ढांचा तैयार करती है और इससे देश के लोगों सहित विदेशियों की देश में निवेश के प्रति रूचि पैदा होती है। यदि माहौल निवेशकों के अनुकूल नहीं है तो निवेशक यहां तक घरेलू निवेशक भी निवेश के लिए देश के बाहर अवसर तलाशेंगे। हमारे अपने व्यापारिक घराने विदेशों में जा रहे हैं क्योंकि वे महसूस करते हैं कि भारत निवेश के लिए बेहतर विकल्प नहीं रह गया है और यही कारण है कि हमारी विकास दर 9 प्रतिशत से 5.5 प्रतिशत नीचे आ गई है। यदि हम इस प्रक्रिया को पूरी तरह से नहीं बदल पाए तो हम विकास में पिछड़ जाएंगे। यह देश गरीबी के विरूद्ध अपनी हार कभी स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए, हमें इस संघर्ष को जीतने के लिए कदम उठाने चाहिए।

कृषि का देश की सकल आय में केवल 16 से 17 प्रतिशत योगदान है। इसका मतलब है कि कृषि पर ज्यादा लोग आश्रित हैं और उन्हें कृषि क्षेत्र के अलावा रोजगार नहीं मिल रहा है। जब कृषि क्षेत्र कम रोजगार या बेरोजगारी के संकट का सामना करता है तो लोग विनिर्माण क्षेत्र में अवसर तलाशना प्रारंभ कर देते हैं। यह कहा गया है कि कम से कम 10 करोड़ लोगों को कृषि क्षेत्र से विनिर्माण क्षेत्र में जाना चाहिए। यह उद्देश्य अच्छा है परन्तु इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए, हमने सिर्फ राष्ट्रीय विनिर्माण नीति बनाई है और आशा कर रहे हैं कि हम वांछित उद्देश्य हासिल कर लेंगे। यह पर्याप्त नहीं है। आज उपभोक्ता केवल वही उत्पाद खरीदता है जो गुणवत्ता में अच्छे और सस्ते हैं। हमें ब्याज दरों में कमी और बिजली की कीमतों में कमी करनी चाहिए और हमें बेहतर बुनियादी ढांचा खड़ा करना चाहिए। यदि हमें अपने देश को कम लागत वाले विनिर्माण केन्द्र के रूप में स्थापित करना है तो कोई लाल फीताशाही नहीं होनी चाहिए और उत्पादन पर कर अंतर्राष्ट्रीय दरों के अनुरूप होने चाहिए परन्तु हम इस संबंध में सफलता हासिल नहीं कर पाए हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास कार्यक्रम एक सफल कार्यक्रम था। ईमानदारी से आत्मविश्लेषण कीजिए कि आज राष्ट्रीय राजमार्गों की क्या स्थिति है। राष्ट्रीय राजमार्ग कार्यक्रम पूरी तरह पिछड़ रहा है। विकासकर्ता परियोजनाओं को अधूरा छोड़कर जा रहे हैं। विवाद न्यायालयों में जा रहे हैं। इसलिए विश्व के कुछेक सर्वाधिक सफल राष्ट्रीय राजमार्ग विकास

कार्यक्रमों की प्रगति धीमी हो गई है। आज प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की स्थिति यह है कि 20699 करोड़ रुपए के कुल आवंटन में से केवल 8100 करोड़ रुपए ही खर्च किए गए हैं। अवसंरचना परियोजनाओं की यह स्थिति है। विद्युत प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। कोयला खानों के आवंटन में अनियमितताओं की वजह से, भारतीय अर्थव्यवस्था के सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र को लगभग लकवा मार गया है। विद्युत संयंत्रों के पास कोयले की कमी है। विद्युत कंपनियों के पास बैंकों को भुगतान करने के लिए पैसा नहीं है।

सरकार की तरफ से सभी वक्ताओं ने टेलीफोन घनत्व की सफलता की कहानी का उपयोग किया है। दो दशक से कम समय में, हमारे यहां 78 या 80 प्रतिशत टेलिफोन घनत्व है। यह क्षेत्र देश से संबंधित है। इस क्षेत्र ने सफलता हासिल की है और 2जी स्पेक्ट्रम के आंवटन के साथ इस क्षेत्र की अवनति आरंभ हो गई है। आज स्पेक्ट्रम के लिए कोई खरीददार नहीं है। यह दर्शाता है कि उत्साह को किस प्रकार निराशा की भावनाओं में बदला जा सकता है। सुधार आखिरकार संभाव्य की कला है। यदि लोग देश में निवेश करने के लिए तैयार हैं तो आपस में लड़ने वाले मंत्रियों और मंत्रालयों को ऐसी बड़ी परियोजनाओं को क्यों रोकना चाहिए? यदि आर्थिक गतिविधियां कम होती हैं तो निवेश प्रभावित होगा, रोजगार सृजन में कमी आएगी और सरकार के राजस्व में कमी आएगी। हम देश में रक्षा उत्पादन को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं। पूर्व-पश्चिम राजमार्ग का निर्माण सिल्चर तक किया जाना था। पूर्वोत्तर में लोग इस राजमार्ग के पूरा न किए जाने से आक्रोशित हैं जो स्वाभाविक है। नकदी अस्तांतरण योजना बहुत अच्छी है और राज सहायता सीधे लाभार्थी को मिलेगी। हम देश में राजकोषीय अनुशासन लेकर आए। आपने मनरेगा जैसी कुछ सामाजिक क्षेत्र योजना शुरू की। जिनका वास्तव में ऋण माफ किए जाने की जरूरत है उनका ऋण माफ नहीं किया गया। मनरेगा का आवंटन कम कर दिया गया है।

वित्तीय कठिनाईयों के होते हुए भी आपने व्यय बढ़ाने का श्रेय लिया। अब आप ऐसी स्थिति में आ गए हैं जब आपके पास पैसा नहीं है। अत: आपको विभिन्न सरकारी योजनाओं के खर्च को कम करना पड़ा और इस वर्ष अपने व्यय में 93,000 करोड़ रुपए की कटौती कर दी। वास्तव में, खाद्य सुरक्षा के लिए 10,000 करोड़ रुपए के बजाए केवल 5,000 करोड़ रुपए की वृद्धि की है और यह वृद्धि खाद्य मुद्रास्फीति के कारण बेकार हो जाएगी क्योंकि इस देश में खाद्य मुद्रास्फीति नियंत्रण से बाहर है। बिहार, मध्य प्रदेश जैसे कुछ राज्य बहुत अच्छा कर रहे हैं और उन्होंने अच्छी विकास दर दर्शायी है। प्रधानमंत्री जी का नेतृत्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आपके मंत्री लड़ रहे हैं और परियोजनाओं को रोक कर रखे हुए हैं। आज हम राष्ट्रमंडल खेलों को उनकी अवसंरचना के लिए याद नहीं करते बल्कि उन्हें हम भ्रष्टाचार के मामलों की वजह से याद करते हैं।

2जी स्पेक्ट्रम ने दूरसंचार की समूची सफलता को बहुत कटु बना दिया है। वीवीआईपी हेलिकॉप्टर सौदे में यह पता लगाने की रिश्वत किसने ली है, के बजाय आपने कहा कि हम संयुक्त संसदीय समिति का गठन करेंगे। आपके मंत्रिमंडल ने चयन समिति की सर्वसम्मत सिफारिश को पूरा बदल दिया है। मैं आग्रह करता हूं कि सरकार के पास अपनी विश्वसनीयता को पुन: प्राप्त करने का यह अंतिम अवसर है और यदि सरकार ऐसा करने के लिए प्रयत्न करे तो बेहतर होगा।

2जी स्पेक्ट्रम ने दूरसंचार की समूची सफलता को बहुत कटु बना दिया है। वीवीआईपी हेलिकॉप्टर सौदे में यह पता लगाने की रिश्वत किसने ली है, के बजाय आपने कहा कि हम संयुक्त संसदीय समिति का गठन करेंगे। आपके मंत्रिमंडल ने चयन समिति की सर्वसम्मत सिफारिश को पूरा बदल दिया है। मैं आग्रह करता हूं कि सरकार करे पास अपनी विश्वसनीयता को पुन: प्राप्त करने का यह अंतिम अवसर है और यदि सरकार ऐसा करने के लिए प्रयत्न के तो बेहतर होगा। कश्मीर देश का एक अटूट हिस्सा है। जम्मू और कश्मीर में एक आकांक्षापूर्ण वर्ग है जो अलगाववाद-विरोधी है और वे मुख्य धारा से जुड़ना चाहते हैं तथा हमें इससे कोई परेशानी नहीं है लेकिन हम अपने सुरक्षाकर्मियों के बलिदान को भी नहीं भूल सकते हैं।

माओवाद एक बहुत बड़ी समस्या है और देश के अनेक जिले इसके प्रभाव में हैं। हमें वहां पर सुरक्षा का माहौल बनाना होगा और उन क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास को साथ-साथ लेकर चलना होगा। कृपया एनसीटीसी को नारा मत बनाइए। इस देश को आतंकवाद से लड़ने के लिए क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। एनसीटीसी को केन्द्र और राज्यों के लिए आसूचना एकत्रित करने, आसूचना बांटने और क्षमता निर्माण का तंत्र बने रहने दीजिए। आतंकवाद के खिलाफ आपकी लड़ाई ऐसी हो जिसमें केन्द्र और राज्य मिलकर कार्य करें। हमारे सैनिकों का सिर काटने जैसी हाल की घटनाओं ने उन

लोगों के उत्साह को कम कर दिया है जिनका सोचना है कि बातचीत की प्रक्रिया में कोई बाधा नहीं है। आतंकवाद और बातचीत की प्रक्रिया साथ-साथ नहीं हो सकते।

हम नेपाल के संवैधानिक संकट में हस्तक्षेप नहीं कर सकते लेकिन एक पड़ोसी होने के नाते, उनके लोकतंत्र की स्थिरता में हमारी गहरी रूचि है। हम आशा करते हैं कि हम बंग्लादेश के साथ हमारे लंबित मुद्दों को ऐसे तरीके से सुलझाने में समर्थ हैं जो कि हमारी लोकतांत्रिक जनसंख्या को भी स्वीकार्य है। मालदीव की स्थिति ने भयंकर रूप धारण कर लिया है और हिंद महासागर की सुरक्षा दांव पर लगी है। बांग्लादेश से बातचीत करते हुए हमें उन्हें यह बताना होगा कि हिंदू अल्पसंख्यक जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा वहां पर एक छोटे से वर्ग की रूढ़िवादिता के कारण अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है।

दिल्ली में, दिसम्बर में एक युवती के बलात्कार और हत्या की घटना ने भारतीय समाज की अंतरात्मा को झकझोर दिया है। मैं सरकार से आग्रह करता हूं कि महिलाओं के प्रति किए जाने वाले अपराधों से संबंधित मुद्दों जिनपर इस सभा में व्यापक सर्वसम्मति है, हमें तत्काल कानून बनाना चाहिए। यदि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनपर आगे और चर्चा किए जाने की आवश्यकता है या जिनपर अलग-अलग विचार हैं तो ऐसे मुद्दों को अस्वीकृत करने का कोई औचित्य नहीं है, उन्हें चर्चा के लिए समुचित संसदीय समितियों या संसदीय फोरम को भेजा जा सकता है। पिछले कुछ वर्षो में भारत में जो कुछ हुआ है, वह गंभीर चिंता का विषय है। आपके पास अभी भी इस दिशा को बदलने और इसकी गति को बढ़ाने का एक अंतिम अवसर है। ●

अटल ज्योति अभियान की शुरुआत

पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने शहडोल में 9 मार्च को 'अटल ज्योति अभियान' की शुरुआत की। इस योजना के प्रारंभ होने से शहडोल संभाग के तीनों जिलों शहडोल, उमरिया और अनूपपुर को 24 घंटे बिजली मिलेगी तथा किसानों को 8 घंटे विद्युत आपूर्ति होगी।

श्री आडवाणी ने स्थानीय पोलेटेक्निक मैदान मे विशाल सभा को संबोधित करते हुए कहा कि 1952 से 2000 तक प्रत्येक लोकसभा चुनाव में उन्होंने भाग लिया है। पहले जनसंघ के झण्डे से बाद में भाजपा के बैनर से किंतु उन्हें आज इस आदिवासी शहडोल संभाग में इस अभियान के प्रारंभ करने मे जो खुशी हो रही है वैसी खुशी नहीं हुई। श्री आडवाणी ने बताया कि आपातकाल के बाद जब मोरारजी देसाई के नेतृत्व में केन्द्र में गैर कांग्रेसी सरकार बनी थी तब वह केन्द्र में मंत्री बने थे। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री एवं पार्टी के वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी भी मंत्री थे। बाद में जब श्री वाजपेयी नेतृत्व में भाजपानीत सरकार बनी तब पहले वह गृहमंत्री और बाद में उप प्रधानमंत्री बने। उस दौरान केन्द्र सरकार ने गांव-गांव को सडकों से जोड़ने के लिए एक बड़ी योजना बनायी थी जिससे सारे देश के गांव शहरों से जुड़ गए। अब अटल ज्योति योजना से गांवों को हर घंटे बिजली मिलना प्रारंभ हो जायेगी।

उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उन्हें बताया कि मई के अंत तक पूरे प्रदेश के 55 हजार गांवों को बिजली दे दी जायेगी। यह एक महत्वाकांक्षी योजना है जिससे आम नागरिकों खासकर ग्रामीणों को सबसे ज्यादा लाभ मिलेगा। यह जान कर उन्हें अपार खुशी हुई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2003 से पूरा हिंदी भाषी क्षेत्र बीमारु राज्य कहा जाता था किन्तु अब नौ वर्षो में भाजपा के प्रभाव से मध्य प्रदेश और कुछ अन्य राज्य बीमारु नहीं रह गये है और प्रगति कर रहे है। इसे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने स्वयं कल स्वीकार किया। ●

आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख अपनाने की जरूरत : राजनाथ सिंह

सीमा पार से जारी आतंकवाद पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह का 15 मार्च 2013 को जारी वक्तव्य

भारतीय जनता पार्टी ने अफजल गुरु को फांसी के संबंध में पाकिस्तान की संसद में पारित प्रस्ताव की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए इसे भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप की निर्लज्ज कार्रवाई बताया है। पाकिस्तान ने भारत के साथ कूटनीतिक आचरण में सभी हदों को पार कर लिया है। भाजपा का स्पष्ट मत है कि भारत में सभी आतंकवादी गतिविधियां पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित हैं और नेशनल असेम्बली में अफजल गुरु पर प्रस्ताव पारित करके पाकिस्तान ने आतंकवादी गुटों के साथ अपना संबंध होने की स्वीकृति पर मुहर लगा दी है।

दुर्भाग्यवश केन्द्र में मौजूद सरकार के पास आतंकवाद से लड़ने के लिए कोई कार्य योजना या दृढ़ इच्छाशक्ति नहीं है। भाजपा केन्द्र की सरकार को पूरा सहयोग देने के लिए तैयार है बशर्ते वह पाकिस्तान से आतंकवादी गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए कठोर कदम उठाए लेकिन सरकार ने हमें और इस देश की जनता को निराश किया है। यूपीए सरकार चौपट हो चुकी है और अपनी पूरी ताकत भाजपा को निशाना बनाने पर लगा रही है। उसे देश की आतंकवाद से रक्षा करने की कोई चिंता नहीं है।

भारतीय सैनिकों का सिर धड़ से अलग करने, हैदराबाद में विस्फोट और श्रीनगर में सीआरपीएफ शिविर पर हमले जैसी अनेक घटनाओं ने सीमा पार से जारी आतंकवाद से निपटने में यूपीए सरकार की अक्षमता की पोल खोल दी है। यूपीए सरकार ने इन आतंकवादियों से हमारे शहरों और लोगों को बचाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

अब समय आ गया है जब सरकार को अपने तरीकों को सुधारकर पाकिस्तान पर दबाव बनाते हुए आतंकवाद के खिलाफ अपना रुख कड़ा करना चाहिए। अगर यूपीए अपने कूटनीतिक कौशल का उपयोग करने में विफल रहती है तो पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी भारत के जख्मों को चोट पहुंचाना जारी रखेंगे।

भाजपा मांग करती है कि श्रीनगर में फिदायीन हमले को देखते हुए भारत को पाकिस्तान के साथ कूटनीतिक संबंधों को तत्काल कम कर देना चाहिए। जब तक पाकिस्तान अपने इस वचन का पालन न करे जो उसने जनवरी 2004 में दिया था कि वह भारत के खिलाफ अपनी जमीन से कोई भी आतंकवादी गतिविधि नहीं चलाएगा, केन्द्र को उसके साथ विश्वास कायम करने के वर्तमान उपायों को फिलहाल रोक देना चाहिए।

अगर पाकिस्तान आतंकवादियों को अपना समर्थन देना नहीं रोके तो भारत को इस्लामाबाद में अपने उच्चायुक्त को वापस बुला लेना चाहिए। यूपीए सरकार की पाकिस्तान पर अत्यधिक ध्यान देने की नीति ने आतंकवादियों और अन्य भारत विरोधी ताकतों के हौसले बढ़ा दिये हैं। आतंकवादियों ने अपने गुटों को उत्तेजित किया है और यह स्थिति 2014 में अफगानिस्तान से नाटों बलों के हटने के बाद और बदतर हो सकती है।

भाजपा का मानना है कि क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए, इन उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम सेना का होना जरूरी है। यूपीए सरकार को अपनी सैन्य बलों की संख्या बढ़ाकर और उनका तेजी से आधुनिकीकरण करके उसे मजबूत बनाने पर ध्यान देना चाहिए। स्थायी शांति मजबूत स्थिति बनाकर ही कायम की जा सकती है न कि कमजोर स्थिति दिखाकर।

पाकिस्तान की संसद में पारित प्रस्ताव को ध्यान में रखकर भाजपा सरकार से अपील करती है कि वह संसद में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करके इस कार्रवाई की निंदा करे और आतंक से लड़ने की अपनी इच्छाशक्ति की पुन: पुष्टि करे। यह प्रस्ताव प्रधानमंत्री स्वयं पेश करें।

अब समय आ गया है जब सरकार को अपने तरीकों को सुधारकर पाकिस्तान पर दबाव बनाते हुए आतंकवाद के खिलाफ अपना रुख कड़ा करना चाहिए। अगर यूपीए अपने कूटनीतिक कौशल का उपयोग करने में विफल रहती है तो पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी भारत के जख्मों को चोट पहुंचाना जारी रखेंगे। ●

देश की आर्थिक हालत चिंताजनक

गत 1, 2 एवं 3 मार्च को नई दिल्ली में संपन्न भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं राष्ट्रीय परिषद बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता व सांसद श्री प्रकाश जावडेकर ने 'आर्थिक प्रस्ताव' प्रस्तुत किया, जिसका समर्थन गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिंकर एवं बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने किया। इस प्रस्ताव पर भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी एवं श्री वेंकैया नायडू, तथा राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने भी अपने विचार रखे। इस प्रस्ताव में भारतीय अर्थव्यवस्था की तेजी से गिरती स्थिति पर चिंता प्रकट करते हुए यूपीए सरकार को नीति-पंगुता और दिशाहीनता के लिए दोषी ठहराया गया है। हम इस प्रस्ताव का पूरा पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं:-

मुद्रास्फीति और भ्रष्टाचार संप्रग सरकार की पहचान बन गये हैं। देश को एक अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आर्थिक मंदी के कलंक को भी झेलना पड़ रहा है, इनके अधीन प्रत्येक आर्थिक मैक्रोपैरामीटर में निरंतर गिरावट आई है। भाजपा भारतीय अर्थव्यवस्था की तेजी से गिरती स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करती है। इसके चलते आम आदमी की तकलीफें बहुत बढ़ गई हैं। भाजपा कांग्रेस संप्रग-नीत सरकार को गैर-कार्य-निष्पादन, नीति पंगुता और दिशाहीनता के लिए दोषी ठहराती है।

आर्थिक स्थिति का कमजोर होना - जहां से चले थे, वहीं लौट आए

भाजपा नीत राजग सरकार को 1998 में 4 प्रतिशत की कम विकास दर विरासत में मिली थी, परन्तु भारत को एक आर्थिक सुपर पावर बनाने के प्रति अपनी वचनबद्धता के कारण इसने अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास किया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के दूरदर्शी नेतृत्व के परिणामस्वरूप भारत ने कई दशकों में पहली बार वर्ष 2004 में 8.25 प्रतिशत विकास दर हासिल की थी। यह उस समय था जब भाजपा नीत राजग सरकार ने कार्यभार छोड़ा था।

भाजपा नीत राजग सरकार को 1998 में 4 प्रतिशत की कम विकास दर विरासत में मिली थी, परन्तु भारत को एक आर्थिक सुपर पावर बनाने के प्रति अपनी वचनबद्धता के कारण इसने अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास किया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के दूरदर्शी नेतृत्व के परिणामस्वरूप भारत ने कई दशकों में पहली बार वर्ष 2004 में 8.25 प्रतिशत विकास दर हासिल की थी। यह उस समय था जब भाजपा नीत राजग् सरकार ने कार्यभार छोड़ा था।

कांग्रेस-नीत संप्रग सरकार को आर्थिक विकास और उसके समेकन के लिए कहीं बेहतर स्वप्न की आशा कर सकती थी। उच्च विकास दर और स्वस्थ भुगतान संतुलन की स्थिति के साथ-साथ कम मुद्रास्फीति और कम ब्याज दर सुदृढ़ आर्थिक विकास और मैक्रो-आर्थिक स्थिरता को हासिल करने के लिए बेहतर आदर्श थे।

तथापि, इस बात से सभी निराश हुए हैं कि कांग्रेस-नीत संप्रग सरकार ने आर्थिक बदलाव का रास्ता अपनाया है। अपने 9 वर्ष के कार्यकाल के दौरान 5 प्रतिशत मुद्रास्फीति दर के साथ 10 प्रतिशत विकास दर प्राप्त करने के बजाए संप्रग सरकार को इसके बिल्कुल विपरीत उपलब्धि हुई - 10 प्रतिशत की मुद्रास्फीति दर और 5 प्रतिशत की विकास दर। संकीर्ण से संकीर्ण अनुमान के अनुसार भी कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के अधीन आर्थिक कुप्रंधन से देश कई दशक पीछे चला गया है। इसके मुकाबले यह देखने योग्य बात है कि राजग ने 4 प्रतिशत सकल घरेलु उत्पाद विकास से शुरूआत की थी और वह देश को

8 प्लस प्रतिशत विकास के पथ पर ले आई, जबकि संप्रग को 8 प्लस प्रतिशत जी.डी.पी. की विकास दर विरासत में मिली थी और यह इसे कम करके 4 प्रतिशत विकास दर पर ले आई है।

मैक्रो-स्थिति

इस संबंध में स्थिति और भी अधिक चिंताजनक है क्योंकि गिरती हुई आर्थिक दर के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में गिरावट आ रही है। कुल मिलाकर आई.आई.पी. (IIP) सूचकांक लगातार गिर रहा है और इस समय दिसम्बर 2012 के माह के लिए यह सूचकांक 0.6 प्रतिशत था। कोयला, खनन, ऊर्जा, उर्वरक और प्राकृतिक गैस जैसे कोर क्षेत्र नकारात्मक जोन में आते हैं।

लगातार बढ़ता हुआ राजकोषीय घाटा नाजुक स्थिति में पहुंच गया है। इस समय राजकोषीय घाटा 5.3 प्रतिशत के आस-पास है। परन्तु इस बात से किसी का भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह और बढ़ सकता है। ऐसा प्रत्येक बजट में राजकोषीय घाटा को कम करने के सरकार द्वारा हर वर्ष दिये गये आश्वासन के बावजूद हो रहा है। यह नोट करना दिलचस्प बात होगी कि राज्यों का राजकोषीय घाटा कम हो रहा है। अत: केंद्र सरकार मुख्य रूप से और एक मात्र रूप से बढ़ते राजकोषीय घाटे के लिए उत्तरदायी है और राज्य सरकारों पर इस संबंध में बराबर का दोषी ठहराना इसके लिए उचित नहीं होगा।

संप्रग सरकार की सबसे बड़ी विफलता मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखने और उसे कम करने में उसकी असफलता है। दुर्भाग्यवश, मुद्रास्फीति किसी प्राकृतिक विपदा के परिणामस्वरूप नहीं है बल्कि यह तो दुर्भाग्यवश इस सरकार का देन उपहार है। पहली बात यही है कि अनाज भण्डार के कुप्रंबधन और वितरण में विसंगतियों के कारण ही मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ा है। जहां देश के गोदामों में मात्र 30 मिलियन टन अनाज का स्टॉक रहना चाहिए था वहां संप्रग सरकार ने 70 मिलियन टन अनाज का विशाल भण्डार स्टॉक संग्रहित किया जिसके परिणामस्वरूप बाजार में अनाज की कमी हो गई और उनकी कीमतें बढ़ गई।

भाजपा नीत राजग सरकार ने ऐतिहासिक आर्थिक कानून-राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजटीय प्रबंधन (FRBM) अधिनियम बनाया था ताकि राजकोषीय घाटे को 3प्रतिशत से नीचे रखा जा सके। दुर्भाग्यवश, कांग्रेस नेतृत्व के अधीन केन्द्र सरकार ने इस संकल्प के प्रति कोई वचनबद्धता नहीं निभाई जबकि राज्य सरकारें FRBM लक्ष्यों के अनुसार मौटे तौर पर कार्य कर रही है जैसा कि उनके वित्तीय आंकड़ों से पता चलता है।

चालू खाता घाटा (CAD) भी गहरी चिंता का विषय है क्योंकि यह सकल घरेलू उत्पाद के 5.4 प्रतिशत के स्तर पर है जो स्वीकार्य नहीं है। वर्तमान स्थिति के लिए उत्तरदायी एक महत्वपूर्ण कारण बचतों और निवेश दरों में भारी कमी है जिसके कारण न केवल आर्थिक विकास कम हुआ है बल्कि दुर्भाग्यवश CAD और राजकोषीय घाटे के वर्तमान असंतुलन को भी बढ़ाया है। इससे भी खराब बात यह है कि सरकार अल्पकालीन ऋण और उसके द्वारा उधार लेने के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे वास्तव में CAD का वित्तपोषण हो रहा है। यहां तक कि अर्थव्यवस्था का नया-नया छात्र भी जानता है कि ऐसी स्थिति अपने वर्तमान दायित्वों को पूरा करने के लिए भावी पीढ़ियों के संसाधनों को समाप्त करने जैसा है।

लगातार बढ़ते CAD और राजकोषीय घाटे के परिणामस्वरूप गत् 12 महीनों में रूपये की कीमत में 20 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है। इसके मुकाबले अनेक अन्य अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं के मूल्यों में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बढ़ोतरी हुई है।

भारत का विदेशी ऋण 260 बिलियन डालर से बढ़कर 340 बिलियन डालर हो गया है जो 30 प्रतिशत बैठता है। ऐसा पहली बार हुआ कि विदेशी ऋण विदेशी आरक्षित पूंजी से अधिक है।

संभाव्य अंतर्राष्ट्रीय डॉउन ग्रेड के प्रत्युत्तर में सरकार ने जल्दबाजी में अनेक निर्णय लेने का फैसला किया है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रों में कीमतें बढ़ गई हैं और योजनागत व्यय को कम कर दिया है जबकि IEKA के दबाव में 30 प्रतिशत सोर्सिंग के नियमों को जबरदस्ती अपनाया गया। भाजपा ऐसे प्रत्यावर्त्ती कदमों की निंदा करती है।

यहां तक कि रूपयों में एफ.डी.आई. भी पिछली तिमाही में घटकर 43 प्रतिशत हो गई है जो कि बहुत अधिक है। हम एक विचित्र स्थिति का सामना कर रहे हैं जिससे घरेलू निवेशक भी विदेशों में निवेश के अवसर ढूंढ़ रहे हैं। वर्ष 2000 में जितना घरेलू निवेश विदेशों में गया वह आंतरिक एफ.डी.आई. का 10 प्रतिशत बैठता है। वर्ष 2011-12 में यह घरेलू एफ.डी.आई. का 50 प्रतिशत बैठता है।

स्थिति को सुधारने के लिए वित्तीय रिस्पांस भी पक्षपातपूर्ण है। संप्रग सरकार राजस्व जुटाने में अपेक्षित कुशलतापूर्वक

कार्यवाही करने के बजाए करों और कीमतों को बढ़ाने में लगी हुई है जिसके कारण आम आदमी पर बोझ और बढ़ता जा रहा है।

मुद्रास्फीति - वास्तविक दुःखदायी कारण

संप्रग सरकार की सबसे बड़ी विफलता मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखने और उसे कम करने में उसकी असफलता है। दुर्भाग्यवश, मुद्रास्फीति किसी प्राकृतिक विपदा के परिणामस्वरूप नहीं है बल्कि यह तो दुर्भाग्यवश इस सरकार का देन उपहार है। पहली बात यही है कि अनाज भण्डार के कुप्रंबधन और वितरण में विसंगतियों के कारण ही मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ा है। जहां देश के गोदामों में मात्र 30 मिलियन टन अनाज का स्टॉक रहना चाहिए था वहां संप्रग सरकार ने 70 मिलियन टन अनाज का विशाल भण्डार स्टॉक संग्रहित किया जिसके परिणामस्वरूप बाजार में अनाज की कमी हो गई और उनकी कीमतें बढ़ गई। दुर्भाग्यवश, मात्रा से अधिक अनाज को भारत के कुपोषित लाखों बच्चों को बांटने के बजाए उसे गोदामों में सड़ने के लिए छोड़ दिया गया और उसके बाद उसे विदेशों में पशुओं के चारे के रूप में निर्यात किया गया और शराब बनाने के लिए उसका इस्तेमाल किया गया। संप्रग सरकार ने अभी तक 13 बार ब्याज दरों में वृद्धि करके धन आपूर्ति को कम करके मुद्रास्फीति के मांग पक्ष की ओर ही ध्यान दिया है, परंतु आज तक इससे अधिक महत्वपूर्ण आपूर्ति पक्ष के मुद्दों पर ध्यान देने का बिल्कुल ही प्रयास नहीं किया है। खाद्य तेल, जो 2003 में आयात सूची की कोई मद नहीं थी, अब वह दस बिलियन यू एस डॉलर का आयात किया जा रहा है। आज देश की खाद्य तेल की 50 प्रतिशत की आवश्यकता आयात के माध्यम से पूरी की जाती है।

आज लोग अभूतपूर्व महंगाई से पिस रहे हैं, वे राहत चाहते हैं। इसके बदले सरकार ईंधन उत्पादों का डिरेग्यूलेशन कर रही है और ऊंची कीमतों, करों, सेवा प्रभारों को और बढ़ाने जा रही है। डीजल के मूल्यों में एक मुश्त 5 रूपये बढ़ा दिए गए और इसके बाद 10 महीनों तक प्रति माह 50 पैसे की किश्तों में बढ़ा दिये जाएंगे। सरकार ने थोक उपभोक्ता की एक नई श्रेणी सृजित की है और एक ही बार में 11 रूपये प्रति लीटर के हिसाब से उसकी कीमत बढ़ा दी है। बजट पेश करने के 48 घण्टे के अन्दर ही सरकार ने पेट्रोल की कीमतों में 1.50 रुपए प्रति लीटर और थोक डीजल में 1.25 रुपए प्रति लीटर की वृद्धि कर डाली है। इस दौरान जमीनी हकीकत की उपेक्षा करते हुए सरकार ने गैस सिलिंडरों की सीमा बांध दी है जिसके परिणामस्वरूप काफी भ्रम पैदा हो गया है और पिछले दरवाजे से कीमतें बढ़ा दी गई हैं। सभी प्रकार के परिवहन लागत तुरंत बढ़ जाने के साथ-साथ इसका सभी प्रकार की वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। वैश्विक अनुभवों से यह पता चलता है कि फारवर्ड एक्सचेंज के माध्यम से आवश्यक वस्तुओं के वायदा बाजार से भी मुद्रास्फीति बढ़ती है फिर भी सरकार ने इस पहलू की अनदेखी की है।

कांग्रेस नीत यूपीए सरकार भ्रष्टाचार की पर्याय बन चुकी है। वीवीआईपी हेलीकाप्टर घोटाला और फार्मलोन माफी घोटाला अभी हाल ही में इस सरकार के न खत्म होने वाले भ्रष्टाचार की सूची में जुड़े हैं। यह बात नोट करने के लिए दिलचस्प होगी कि इटली ने, जिसे हेलीकाप्टर सौदे से लाभ होना था, भ्रष्टाचार का पता लगने के तुरंत बाद रिश्वत देने वालों के विरूद्ध कार्रवाई की, जबकि भारत जिसे, इस घोटाले से नुकसान हुआ है, रिश्वत लेने वालों का पता लगाने के लिए तैयार नहीं है। "द फैमिली" के रूप में रिश्वत लेनेवालों के उल्लेख के बारे में रहस्य अभी भी बना हुआ है।

मुद्रास्फीति से कामकाजी और मध्यम वर्ग के लोगों की वास्तविक आय में कमी होती है। जिनके वेतन और मजदूरी को बढ़ते हुए मूल्यों के साथ नहीं जोड़ा जाता। इससे जीवन स्तर पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और जीवनयापन कठिन हो जाता है। मुद्रास्फीति के कारण सबसे अधिक कष्ट महिलाओं पर पड़ता है क्योंकि उन्हें कठिन फैसले लेने होते हैं। मुद्रास्फीति भी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके कारण सामाजिक एवं आर्थिक न्याय पर बुरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि इससे वास्तविक आस्तियां गरीब वर्गो से अमीर वर्गो के पास चली जाती है।

भाजपा मांग करती है कि डीजल, गैस, पेट्रोल, रेल और अन्य सेवाओं के लिये सभी प्रशासनिक मूल्यों में की गई वृद्धि को तुरंत वापस लिया जाए क्योंकि इससे आम आदमी पर बुरी तरह आर्थिक बोझ पड़ गया है।

इसकी पीड़ा उस समय देखने को मिली जब 50 मिलियन से अधिक कामगारों और कर्मचारियों ने निरंतर बढ़ रही महंगाई और संप्रग सरकार की श्रमिक विरोधी नीतियों पर असंतोष व्यक्त करने के लिए दो दिन की राष्ट्रव्यापी हड़ताल की। सरकार के पास न तो मजदूरी नीति है और न

ही उसके पास एक उचित सप्लाई साइड प्रशासित करने की क्षमता है।

लूट जारी है

कांग्रेस नीत यूपीए सरकार भ्रष्टाचार की पर्याय बन चुकी है। वीवीआईपी हेलीकाप्टर घोटाला और फार्मलोन माफी घोटाला अभी हाल ही में इस सरकार के न खत्म होने वाले भ्रष्टाचार की सूची में जुड़े हैं। यह बात नोट करने के लिए दिलचस्प होगी कि इटली ने, जिसे हेलीकाप्टर सौदे से लाभ होना था, भ्रष्टाचार का पता लगने के तुरंत बाद रिश्वत देने वालों के विरूद्ध कार्रवाई की, जबकि भारत जिसे, इस घोटाले से नुकसान हुआ है, रिश्वत लेने वालों का पता लगाने के लिए तैयार नहीं है। ''द फैमिली'' के रूप में रिश्वत लेनेवालों के उल्लेख के बारे में रहस्य अभी भी बना हुआ है। सरकार ने इस मामले में सीबीआई द्वारा जांच के आदेश दे दिए हैं परंतु वह इसे न्यायालय की निगरानी में कराने के लिए तैयार नहीं है।

बुनियादी विकास पर राजग को विशेष प्रयास को गत एक दशक में संप्रग के दूर-दृष्टिविहीन प्रशासन के कारण धक्का लगा। राजग शासन काल में राजपथों का निर्माण प्रतिदिन 11 कि.मी. के स्तर पर पहुँच गया था। आज प्रतिदिन 22 कि.मी. राजपथ बनाने के बड़े-बड़े वायदे के बावजूद यह मात्र तीन कि.मी. प्रतिदिन रह गया है जो बहुत ही निराशाजनक बात है। ईस्ट-वेस्ट और नार्थ-साऊथ कोरिडोर अभी तक दिवास्वप्न बने हुए हैं। यहां तक की ग्राम सड़क योजना भी धीमी पड़ गई है।

इसने न तो कोई एफआईआर दर्ज की है न ही कोई एल आर जारी किया है। वह यह जानते हुए जेपीसी गठन की पेशकश कर रही है कि वह जांच करने और किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकेगी। इससे यह अटकलबाजियां लगाई जाती हैं कि सरकार सच्चाई का पता लगाने और दोषियों को दंडित करने के बजाए रिश्वत लेने वालों को बचाने में ज्यादा रूचि रखती है।

एक बहुत बड़ा फार्म लोन माफी घोटाले का पर्दाफाश कैग ने किया है। 34 लाख से अधिक किसानों को, जो लोन माफी के पात्र थे, योजना के त्रुटिपूर्ण क्रियान्वयन के कारण इसका लाभ नहीं मिल पाया, इसके बजाए 24 लाख से अधिक पात्र किसानों को योजना के धीमे क्रियान्वयन के कारण भारी लाभ मिल गया। भ्रष्टाचार, मुद्रास्फीति बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण कारक है जो ईमानदारी से निवेश को हतोत्साहित तो करता ही है और साथ ही राजकोषीय घाटे का भी कारण है। सरकार ने अपने घोटालों पर पर्दा डालने के उद्देश्य से जानबूझकर कैग की आलोचना की है और लोकलेखा समिति की कार्रवाई में बाधा डाली है। भाजपा मांग करती है कि इन दोनों घोटालों की जांच न्यायालय की निगरानी में कराई जानी चाहिए और वह यह भी मांग करती है कि पात्र किसानों का तुरंत लाभ दिया जाना चाहिए।

प्रशासन की कमी

संप्रग सरकार अपनी अंदरूनी विफलताओं के लिए बहाने ढूंढ़ने और लगातार बाहरी कारकों को दोष देने में माहिर है। इसके द्वारा नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन करना, अनिर्णय और कुप्रशासन वर्तमान स्थिति के लिए उत्तरदायी है। कांग्रेसनीत यूपीए सरकार ने विशाल प्राकृतिक संसाधनों को नि:शुल्क अथवा वास्तविक लागत की मामूली दर पर बांटे जिसके कारण पर्याप्त राजस्व प्राप्त नहीं किया जा सका। कोयला और स्पेक्ट्रम ऐसे कुछ उदाहरण हैं। कोयले के वितरण को सस्ती बिजली की निश्चित सप्लाई से नहीं जोड़ा गया इसके कारण इन्हें भारी भ्रष्टाचार का उदाहरण माना जाता है।

अर्थ-व्यवस्था के सभी वर्गों में अनिर्णय की स्थिति पूरी तरह से विद्यमान है। प्रधानमंत्री ने विद्युत संयंत्रों को कोयले की त्रुटिपुर्ण सप्लाई पर निगरानी रखने के लिए एक समिति बनाई थी जो अभी तक अपने मकसद में कामयाब नहीं हुई है। उन्होंने तेजी से स्वीकृति दिए जाने के लिए एक राष्ट्रीय निवेश बोर्ड बनाने का भी प्रयास किया था जिसे कांग्रेस पार्टी में उनके राजनीतिक आकाओं ने समाप्त कर दिया। आखिरकार, उन्होंने निवेश के लिए एक मंत्रिमंडलीय समिति का गठन किया, जिसने गत चार वर्षों में बहुत ही कम परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है। प्रधानमंत्री की दो विशिष्ट फ्रेट कोरिडोर बनाने की सुनहरी परियोजना पूरी तरह से अधर में लटकी हुई है और यहां तक कि अधूरी परियोजनाओं को पूरा करने का उनका प्रस्ताव अभी शुरू भी नहीं हुआ है। यहां तक कि अनेक परियोजनाओं के लिये विद्युत खरीद समझौते भी नहीं हो पाये हैं। प्रधानमंत्री की पूर्ण अकुशलता उस समय देखने को मिली, जब उन्होंने देश को बताया कि ''पैसा पेड़ों पर नहीं उगता''।

यह आर्थिक अव्यवस्था के अलावा और कुछ नहीं है जिसका कारण सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी के अन्दर अन्दरूनी कलह एवं भ्रम है। यह बात एक ओर योजना आयोग द्वारा और दूसरी ओर एन.ए.सी. द्वारा व्यक्त किये बिल्कुल विरोधी विचारों से साबित होती है। वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अलग-अलग विचार व्यक्त करने से इस स्थिति की

पुष्टि होती है। इसका आभास गत् वर्ष के बजट में भी मिलता है। जब पूर्व-प्रभावी करों एवं जी.ए.ए.आर. (GAAR) की घोषणा की गई थी और बाद में इन्हें वापस ले लिया गया और उन्हें स्थगित कर दिया गया था।

भाजपा नीत राजग बनाम संप्रग

बुनियादी विकास पर राजग को विशेष प्रयास को गत एक दशक में संप्रग के दूर-दृष्टिविहीन प्रशासन के कारण धक्का लगा। राजग शासन काल में राजपथों का निर्माण प्रतिदिन 11 कि.मी. के स्तर पर पहुँच गया था। आज प्रतिदिन 22 कि.मी. राजपथ बनाने के बड़े-बड़े वायदे के बावजूद यह मात्र तीन कि.मी. प्रतिदिन रह गया है जो बहुत ही निराशाजनक बात है। ईस्ट-वेस्ट और नार्थ-साऊथ कोरिडोर अभी तक दिवास्वप्न बने हुए हैं। यहां तक की ग्राम सड़क योजना भी धीमी पड़ गई है।

विद्युत उत्पादन, जिसका लक्ष्य 11वीं पंचवर्षीय योजना में 78000 मेगावाट रखा गया था, वास्तव में केवल 54000 मेगावाट हो पाया है। रेल बंदरगाहों, तेल और गैस जैसे अन्य बुनियादी क्षेत्रों का कार्य-निष्पादन पूरी तरह से निराशाजनक है। राजग ने चार वर्षो के दौरान 40 मिलियन अतिरिक्त परिवारों को गैस कनैक्शन देना सुनिश्चित किया था जबकि संप्रग सरकार गत 9 वर्ष के कार्यकाल में इन आंकड़ों के बराबर भी नहीं पहुंची हैं। एम.टी.एन.एल., बी.एस.एन.एल, एन.टी.पी.सी. और एयर इण्डिया जैसे सरकारी क्षेत्र के उद्यम उनके राजनीतिक आंकड़ों द्वारा दुरूप्रयोग और कुप्रबंधन के कारण हुई भारी हानि की वजह से बहुत बड़ी समस्या से जूझ रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप सकल निवेश में भी गिरावट आई है।

संप्रग ने अभी तक देश को 'जॉबलेस ग्रोथ' ही दी है। जहां भाजपा नीत एनडीए ने अपने शासनकाल के दौरान 12 मिलियन नौकरियों का सृजन किया था, वहां संप्रग ने केवल 2 मिलियन नौकरियों का सृजन किया है। सरकार की मनरेगा की महत्वाकांक्षी योजना निश्चय ही एक सामाजिक कल्याण की योजना है। और नियमित रूप से रोजगार सृजित करने की योजना नहीं हैं। उपुर्यक्त स्थिति को सुधारने के लिए देश में सभी स्तरों पर बुनियादी सुधार किये जाने की आवश्यकता है जिनकी आशा कांग्रेसनीत यूपीए सरकार से नहीं की जा सकती।

गरीबी उन्मूलन के बारे में संप्रग सरकार का रवैया हकदारी तक सीमित है, सशक्त बनाने का नहीं। सशक्त बनाने का अर्थ होता है इसे लाभदायक बनाना और टिकाऊ रणनीति बनाना जबकि हकदारी लोगों को स्थायी रूप से सरकार पर निर्भर बनाती है।

किसानों की दशा

भारत में कृषि की स्थिति बहुत खराब है जिसमें जनसंख्या का 60 प्रतिशत से अधिक लोग लगे हुए हैं। इस खराब स्थिति का एक उदाहरण आत्महत्याओं के ग्राफ से पता लगता है। संप्रग शासन काल के दौरान ''ट्रर्म ऑफ ट्रेड'' (व्यापारिक शर्ते) हमेशा किसानों के खिलाफ गई हैं। उन्हें अपने उत्पादों का वास्तविक लाभप्रद मूल्य मिलने के उनके अधिकार से लगातार वंचित रखा गया है। न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण करने वालों ने हमेशा पक्षपातपूर्ण कार्यवाही की और वे वास्तविकता से अनभिज्ञ रहे। राजग सरकार ने लाभप्रद मूल्यों की गणना का एक व्यवहार्य फार्मूले का सुझाव देने के लिए स्वामीनाथन आयोग नियुक्त किया था। उन्होंने न्यूनतम समर्थन मूल्य से 50 प्रतिशत का अधिक का सुझाव दिया था। संप्रग सरकार लगातार इस फार्मूले को रद्द करती रही और किसानों को वास्तविक लाभप्रद मूल्य प्रदान नहीं किया।

संप्रग सरकार यह दावा करती है कि उन्होंने न्यूनतम समर्थन मूल्य में भारी वृद्धि की है। वास्तव में यह इनपुट लागत थी जो न्यूनतम समर्थन मूल्यों की तुलना में अधिक बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप, न्यनतम समर्थन मूल्य और इनपुट की लागत में मार्जिन लगातार कम हो गया। अनेक स्थानों पर खरीद केंद्र उस समय काम नहीं करते जब किसान अपना उत्पाद वहां लाते हैं। उन्हें अपने उत्पाद की बिक्री मजबूरन करनी पड़ती है। यहां तक कि अनेक केंद्रों पर सरकार आवश्यक मात्रा में जूट बैग की सप्लाई नहीं कर पाती जिसके परिणामस्वरूप भारी हानि होती है।

कृषि लागत और मूल्य आयोग की नवीनतम गणना किसानों के इस प्रकार गिरते मार्जिन की साक्ष्य है। धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य और उसकी उत्पादन लागत में अंतर 2010-11 में 35 प्रतिशत से कम होकर 2012-13 में 8 प्रतिशत ही रह गया है। गेहूँ के मामले में भी यह अंतर गत तीन वर्षो के दौरान 33 प्रतिशत से कम होकर 13 प्रतिशत रह गया है। बीजों, कीटनाशकों, उर्वरकों, डीजल और बिजली, पानी की लागत बढ़ गई है। किसान हताश होने पर मजबूर हो गये हैं। संप्रग सरकार की इस प्रकार की शोषण प्रणाली से किसानों को कम पैसा मिल रहा है जबकि उपभोक्ताओं को ऊँचे मूल्य चुकाने पड़ रहे हैं।

भाजपा मांग करती है कि लाभप्रद मूल्यों की गणना संबंधी स्वामीनाथन समिति के फार्मूले को तुरन्त स्वीकार किया जाये और राजग सरकार द्वारा चालू की गई निश्चित न्यूनतम आय गारंटी योजना को पुनः चालू किया जाये।

भाजपा कृषि के प्रति इस प्रकार की नीति का अनुसरण करने के भावी खतरों के बारे में कांग्रेसनीत संप्रग सरकार को चेतावनी भी देती है क्योंकि इससे गत कुछ दशकों के दौरान खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के बारे में भारत की उपलब्धियों को वास्तव में आघात पहुंच सकता है।

संप्रग की उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना (NBS) के कारण सभी गैर-सब्सिड़ी वाले उर्वरकों के मूल्यों में वृद्वि हुई है जिसके फलस्वरूप योजना का उद्देश्य ही विफल हो गया है। गैर-यूरिया उर्वरकों के मूल्य भी आसमान छू रहे हैं, जिसके फलस्वरूप यूरिया का अत्याधिक उपयोग हो रहा है। किसानों को उर्वरकों की कम सप्लाई हो रही है और इसके कारण इसकी कालाबाजारी हो रही है। हर वर्ष किसान देश भर में सैंकड़ों स्थानों पर इसके विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं।

सरकार ने पूरी तरह से सिंचाई की उपेक्षा की है जो एक मात्र वर्षा पर आधारित है और वर्षा हाने पर ही कृषि की गतिविधियां चल पाती हैं। वर्ष 1989 में जब डॉ. मनमोहन सिंह योजना आयोग में थे इसने गत कुछ वर्षो के दौरान भरपूर फसल को देखते हुए सिंचाई के लिए आवंटन को कम करने का निर्णय लिया था। इस एक विनाशकारी निर्णय के कारण राष्ट्र सिंचाई के मामले में 20 साल पिछड़ गया और इससे कृषि क्षेत्र को अपूरणीय क्षति हुई।

सूखा और बेमौसम की बरसात

कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडू, आन्ध्र प्रदेश और राजस्थान के कई हिस्सों में भंयकर सूखे की स्थिति है। देश में 100 से अधिक जिले बुरी तरह से प्रभावित हैं। फसलें बर्बाद हो गई है। ऋण बढ़ते जा रहे हैं। किसान भारी मुसिबत में है। जल की कमी के कारण अनेक समस्याएं खड़ी हो गई हैं यहां तक की पीने के पानी की समस्या भी पैदा हो गई है और पानी की कमी के कारण अनेक विद्युत संयंत्र बंद हो गये हैं। पानी और चारे के अभाव में जन पशु शिविर आयोजित करने पड़े। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां मंद पड़ गयी हैं फिर भी केंद्र सरकार किसानों की सहायता करने के लिए तुरन्त कार्यवाही करने में असफल रही है।

जनवरी-फरवरी के महीनों में बेमौसम की बरसात और काफी समय तक सर्दी का मौसम रहने के कारण उत्तरी भारत में खड़ी फसलों को अपूरणीय क्षति पहुंची है। रबी फसल के उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ने की पूरी आशा है और इससे किसानों को भारी नुकसान हो सकता है।

भाजपा माँग करती है कि पीड़ित किसानों के ऋणों को तुरन्त माफ किया जाये और प्रभावित राज्यों को सभी आवश्यक सहायता दी जाये।

भाजपा-नीत राजग का राष्ट्रीय विकास में योगदान

भाजपा को कृषि में शानदार कार्य के लिए समग्र विकास और लोगों के हित वाले सुधार करने के लिए अपनी राज्य सरकारों पर गर्व है।

यदि देश की कृषि 3.5 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ रही है जिसके लिए राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने केन्द्र सरकार को शाबाशी दी है तो यह बात नोट की जानी चाहिए कि भाजपा और राजग शासित राज्यों में औसत कृषि विकास राष्ट्रीय औसत से दो गुना अधिक है।

कांग्रेस पार्टी खाद्य सुरक्षा और प्रत्यक्ष नकदी अंतरण योजनाओं के मुद्दे पर अपने राजनीतिक भविष्य के साथ जोड़ रही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने पहले ही सफलतापूर्वक खाद्य सुरक्षा योजना संबंधी कानून बनाया है और उसे लागू किया है जिसके अंतर्गत राज्य के 90 प्रतिशत लोगों को कवर किया गया है। इस सफल मॉडल की लगातार लगभग सारे विश्व में कवरेज के लिए प्रशंसा की जा रही है। राजग शासित अनेक राज्य पहले से ही छात्रवृत्तियों, पेंशन और अनेक अन्य कल्याणकारी योजनाओं के लिए बैंकों के माध्यम से प्रत्यक्ष नकदी अंतरण का अनुपालन कर रही है।

कांग्रेस पार्टी खाद्य सुरक्षा और प्रत्यक्ष नकदी अंतरण योजनाओं के मुद्दे पर अपने राजनीतिक भविष्य के साथ जोड़ रही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने पहले ही सफलतापूर्वक खाद्य सुरक्षा योजना संबंधी कानून बनाया है और उसे लागू किया है जिसके अंतर्गत राज्य के 90 प्रतिशत लोगों को कवर किया गया है। इस सफल मॉडल की लगातार लगभग सारे विश्व में कवरेज के लिए प्रशंसा की जा रही है। राजग शासित अनेक राज्य पहले से ही छात्रवृत्तियों, पेंशन और अनेक अन्य कल्याणकारी योजनाओं के लिए बैंकों के माध्यम से प्रत्यक्ष नकदी अंतरण का अनुपालन कर रही है।

भाजपा और राजग-शासित राज्यों ने अपने सुराज से तेजी से प्रगति करने का उदाहरण स्थापित किया है। यदि देश में 5 प्रतिशत विकास की दर है तो यह केवल राजग-शासित राज्यों द्वारा लगातार 10 प्रतिशत औसत वार्षिक विकास वृद्धि दर होने के कारण है।

यदि कांग्रेस नीत संप्रग सरकार अर्थव्यवस्था का सुचारू प्रबंधन नहीं कर सकती तो उनके द्वारा देश के लिए बेहतर सेवा यह होती कि वे

भाजपा और राजग राज्य सरकारों के नये-नये और सफल कार्यक्रमों का अनुसरण करते हुए उन्हें लागू करती।

केन्द्र सरकार राजग-शासित राज्यों के इन कार्यों को भलीभांति जानते हुए भी, इन राज्यों के साथ खनन मामलों पर सवाल खड़े कर रही है तथा कई अन्य योजनाओं पर भी भेदभाव किया जाता है।

बजट-2013

28 फरवरी को संसद में प्रस्तुत किए गए केन्द्रीय बजट में भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्धार के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं की है। इसमें नीति और कराधान ढांचे में कुछ कास्मेटिक (बनावटी) परिवर्तन किए गए हैं। यद्यपि बजट भारी भरकम शब्दाडंबर से भरा पड़ा है, तथापि इसमें अभीष्ट लक्ष्य कहीं नजर नहीं आता। इसमें भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कुछ नहीं है। कृषि की अनदेखी की गई है। यहां तक कि आम आदमी का उल्लेख करने की परम्परा को भी नहीं निभाया गया। इसमें ऐसे किन्हीं कदमों का उल्लेख नहीं है जिनसे निर्यात बढ़े, मुद्रास्फीति पर नियंत्रण हो और रूपया मजबूत हो सके। अर्थव्यवस्था को 5 प्रतिशत के विकास दर से नीचे लाकर संप्रग अपने ताजा बजट में 9 प्रतिशत विकास दर के लक्ष्य को प्राप्त करने के अपने प्रारम्भिक रोडमैप तैयार करने में विफल रहा है।

बजट में एक चेतावनी भी है। 96980 करोड़ रूपये की पेट्रोलियम सब्सिडी को कम करके 65000 करोड़ रू. करने का इरादा है। इससे यह पता चलता है कि पेट्रोल, डीजल और गैस के मूल्य और बढ़ेंगे।

बजट में एक चेतावनी भी है। 96980 करोड़ रूपये की पेट्रोलियम सब्सिडी को कम करके 65000 करोड़ रू. करने का इरादा है। इससे यह पता चलता है कि पेट्रोल, डीजल और गैस के मूल्य और बढ़ेंगे। यह बजट कोई नीतिगत वक्तव्य नहीं है। इसमें दिशा संबंधी कोई परिवर्तन नहीं है। यह मात्र हिसाब किताब करने की एक कार्रवाई है जिसमें व्यय को कम किया गया है। उसके बढ़ने की कोई संभावना नहीं बतायी गयी। इससे विकास नहीं बढ़ेगा। गरीब और कमजोर वर्गों के साथ-साथ मध्यम वर्ग भी बुरी तरह से प्रभावित होंगे।

वर्ष 2012-13 के पुनरीक्षित अनुमानों में राज्यों के पूंजी परिव्यय में 60,000 करोड़ रूपये की भारी कटौती की गई है जो सबसे बड़ा धोखा है। इसके लिए न तो कोई बहस हुई न कोई घोषणा हुई।

वित्तमंत्री ने चालू खाता घाटा (CAD) के वित्त पोषण के लिए अगले दो वर्षों के दौरान 75 बिलियन अमरीकी डॉलर की हमारी आवश्यकता का उल्लेख किया है। उनके अनुसार ऐसा करने के तीन उपाय हैं-एफडीआई, एफआईआई और इसीबी। इससे यह पता चलता है कि कांग्रेस नीत संप्रग सरकार द्वारा आर्थिक सुधार का जो रास्ता अपनाया है वह राष्ट्रीय जरूरत के अनुरूप नहीं है बल्कि यह वैश्विक दबाव से प्रभावित है। प्रत्येक देश को सुधार का अपना स्वयं का रास्ता ढूंढ़ना होता है जो टिकाऊ हो और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो। इस संबंध में भाजपा का देश को तेजी से विकास के रास्ते पर ले जाने का प्रमाणित ट्रैक रिकार्ड है और हम इसके प्रति वचनबद्ध हैं और दोबारा ऐसा करने के लिए सक्षम हैं।

संक्षेप में, अपनी जनविरोधी नीतियों से कांग्रेस ने समाज के गरीब वर्गों और किसानों को भारी हानि पहुंचायी है। मध्यमवर्गीय लोगों की आशाएं और आकांक्षाएं छिन-भिन्न हो गयी हैं। शहरी और ग्रामीण दोनों अर्थव्यवस्थाओं को समान रूप से नुकसान पहुंचा है और रोजगार और विकास बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं।

अत: भाजपा मांग करती है,

- पेट्रोल, डीजल के प्रशासित मूल्यों में की गयी सभी बढ़ोतरी को तुरन्त वापिस लिया जाये और गैस सिलेण्डरों की सीमा को समाप्त किया जाये।
- सभी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों को आवश्यक नीति सम्बन्धी सुधार करके कम किया जाये।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य को बढ़ाया जाये जो लागत + 50 प्रतिशत के फार्मूले पर आधारित हो।
- किसानों के लिए सुनिश्चित न्यूनतम आय गारन्टी योजना को पुन: चालू किया जाये।
- सूखा और बेमौसम की बरसात से प्रभावित किसानों के ऋण माफ किये जायें।
- उन पात्र किसानों को ऋण माफी का लाभ दिया जाये जो फार्म ऋण माफी योजना के क्रियान्वयन से वंचित रह गये हैं।
- उर्वरकों के मूल्यों को कम करने के लिए तुरन्त कदम उठाये जायें।
- भाजपा ऐसे सभी लोगों के लिए रोजगार, मजदूरी और सामाजिक सुरक्षा की मांग करती है, जिन्हें यह अभी तक नहीं मिल पा रहे हैं।

यदि यह मांगें पूरी नहीं की जाएंगी तो भाजपा संप्रग सरकार की इन जन-विरोधी और विकास विरोधी आर्थिक नीतियों के खिलाफ जन आंदोलन चलाएगी।●

हमें जन-अपेक्षाओं को पूरा करना होगा : लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं परिषद बैठक में 3 मार्च, 2013 को भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने प्रेरक मार्गदर्शन भाषण किया। श्री आडवाणी ने यूपीए सरकार को आजाद भारत के इतिहास में अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार करार देते हुए कहा कि देश कांग्रेस के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के प्रति रोष और विरोध का माहौल है। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा जन-अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार होने का संदेश दे। हम श्री आडवाणी के भाषण का पूरा पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं :

अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी, सुषमा जी, अरुण जी, भाजपा/एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और मंत्रीगण और राष्ट्रीय परिषद के अधिवेशन में उपस्थित सभी अन्य प्रिय सहयोगी,

मैं आप सभी के साथ श्री राजनाथ जी को बधाई देने के लिए शामिल हुआ हूं जिन्हें हमने हाल ही में अपनी पार्टी का अध्यक्ष चुना है। पार्टी अध्यक्ष के रुप में यह उनका दूसरा कार्यकाल है। वे काफी लंबे समय से पार्टी के वरिष्ठ नेता रहे हैं। उन्होंने पर्याप्त राजनीतिक और प्रशासनिक अनुभव हासिल किया है।

मैं श्री राजनाथ जी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हू। और मैं पूरे पार्टी संगठन से आग्रह करता हूं कि वह आने वाले महीनों में सामने खड़े होने वाले चुनौतीपूर्ण कार्यों और संघर्षों का मुकाबला करने के लिए उनके नेतृत्व में पार्टी में नया जोश भरें। देश में साधारण तौर पर केन्द्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के प्रति रोष और विरोध का माहौल है। जनता का ऐसा मूड कई कारणों से बना है लेकिन इनमें सबसे प्रमुख बात जो समाज के सभी वर्गों के मन में बैठ गई है, वह यह है कि आजाद भारत के इतिहास में यह अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार है।

यूपीए-1 की दो विशेषताएं थीं बेतहाशा मंहगाई और वोट के बदले नोट की बदनाम घटना।

यूपीए-2 की खूबियां हैं हजारों करोड़ रुपये का अब तक का जबरदस्त भ्रष्टाचार।

भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे के आंदोलन को लोगों का व्यापक समर्थन इस बात का संकेत था कि जनता क्या चाहती है। दुर्भाग्यवश भाजपा जन भावना को समझने और उस पर पर्याप्त तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करने में विफल रही। इन दोनों मुद्दों पर पार्टी ने सरकार को संसद के दोनों सदनों में जबरदस्त तरीके से घेरा। लेकिन कुल मिलाकर बाहर यहां तक कि हमारे समर्थकों को भी निराशा हाथ लगी। बिना किसी औपचारिकता के हमें इस बात को मानना होगा कि कर्नाटक में स्थिति से निपटने में हमारे ढुलमुल सिद्धांतहीन प्रबंधन के कारण हमारी छवि को काफी नुकसान पहुंचा है। हम भूल गए कि लोग किसी भी राजनैतिक दल का आंकलन उसकी भ्रष्टाचार से निपटने की प्रतिबद्धता से करते हैं न कि उसकी घोषणाओं से बल्कि उसकी कार्यप्रणाली और जरुरत पड़ने पर उसकी दंडात्मक कार्रवाइयों से करते हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर पार्टी को हर हालत में कड़े नियमों का पालन करना चाहिए।

मित्रो, जब 1980 में भाजपा बनी, श्री वाजपेयी ने हमें प्रेरणा दी थी कि पार्टी को .....'' एकदम अलग तरह का'' बनाएं। हमने निश्चित तौर पर इस वजह से ख्याति अर्जित की, जिसने भाजपा को आम लोगों के साथ-साथ देशभर के राजननीतिक दृष्टि से जागरुक लोगों का प्रिय बना दिया।

लोग, यहां तक कि हमारे राजनैतिक विरोधी भी भाजपा

में अनुशासन की विशिष्ट भावना और सहयोग से काम करने की सराहना करते हैं।

लेकिन इस चाह के विपरीत, भाजपा ने पिछले कुछ वर्षों में अपना आधार तैयार किया है और उसकी छवि यह बन गई है कि वह एक अलग तरह की पार्टी है, जो विविध तरीकों से अपने विचारों को अभिव्यक्त करती है।

किसी भी राजनैतिक संगठन में विचारों में खरे मतभेद होना स्वाभाविक है। उनका स्वागत है। वह उसके स्वस्थ विस्तार और विकास में योगदान करते हैं।

भाजपा में हम इस बात पर गर्व महसूस करते हैं कि हमारी वंशवाद वाली पार्टी नहीं है। हमारी पार्टी आंतरिक लोकतंत्र को महत्व देती है और उसे बढ़ावा देती है। लेकिन हमें इस बात को अवश्य स्वीकार करना होगा कि संगठन के उच्च स्तर पर आंतरिक संबंध आंतरिक लोकतंत्र को बरकरार रखते हैं। अगर आंतरिक अनुशासन के कारण आंतरिक संबंध कमजोर होने की इजाजत दी जाएगी, जो हमेशा से भाजपा और पूर्व में भारतीय जनसंघ का हॉलमार्क रहे हैं, पार्टी की छवि आंतरिक मतभेदों वाले संगठन के रुप में बनने लगती है। इसलिए मैं श्री राजनाथ सिंह जी से आग्रह करुंगा कि केन्द्र और राज्य स्तरों पर वरिष्ठ नेताओं के सहयोग से इस स्थिति को सुधारने के लिए कड़े कदम उठाएं। मित्रों, आज देश की राजनैतिक स्थिति सुस्पष्ट संकेत दे रही है, लोग बदलाव चाहते हैं।

भारत की प्रगति में ठहराव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

सरकार मंहगाई पर अंकुश लगाने में पूरी तरह विफल रही है। इसके विपरीत प्रत्येक नये नीतिगत फैसले खाद्य मुद्रास्फीति को बढ़ा रहे है और अन्य आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के दाम बढ़ रहे हैं। राज्य सरकारों के साथ केन्द्र के संबंध कभी इतने खराब नहीं रहे।

कांग्रेस के नेता आर्थिक विकास की गति तेज करने, विकास में असंतुलन समाप्त करने और सुशासन के लिए सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए कोई बड़ा और ठोस सुझाव देने में पूरी तरह नाकाम रहे हैं।

खोखले नारों को छोड़कर, कांग्रेस पार्टी और उसकी सरकार भारत के नौजवानों के सपनों, आकांक्षाओं और उनकी रचनात्मक ऊर्जा का इस्तेमाल करने में विफल रही है। केन्द्र में यूपीए सरकार का खराब प्रदर्शन विभिन्न राज्यों में कांग्रेस सरकार के प्रदर्शन से पूरी तरह मेल खाता है। अत: यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि भारत की जनता यूपीए सरकार से छुटकारा पाना चाहती है।

यूपीए-2 के अपने कार्यकाल के अंतिम वर्ष में प्रवेश करने के साथ ही, जब भी संसदीय चुनाव होंगे, लोगों का ध्यान तेजी से इस बात की तरफ जाएगा कि इसका विकल्प कौन हो सकता है।

कांग्रेस के नेताओं को मुग़ालता है कि उनकी पार्टी का कोई विकल्प नहीं हैं। लेकिन उनके इस मुग़ालते को जनता पूरी तरह खत्म कर सकती है।

तथापि दो सवाल उठते हैं:

1) इस विकल्प का आकार क्या होगा?

2) इस विकल्प का लाभ सुनिश्चित करने के लिए भाजपा को क्या भूमिका निभानी होगी?

इन दोनों सवालों के जवाब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सबसे पहले हमें समान विचारधारा वाले सभी दलों-एनडीए में शामिल और एनडीए के बाहर वाले- दोनों के साथ मिलकर काम करना होगा-ताकि लोगों को विश्वास दिलाया जा सके कि सुशासन के राजी एजेंडा के साथ उनके सामने एक गैर कांग्रेस विकल्प मौजूद है।

सूरजकुंड में भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पिछली बैठक में मेरी टिप्पणी का यही मतलब था। मैंने एनडीए में औरों को भी शामिल करने का विचार आगे बढ़ाया था।

दूसरा, भाजपा को एक गैर कांग्रेस विकल्प का मजबूत, विशाल और प्रमुख घटक बनने के लिए लोगों का दिल जीतने के उद्देश्य से अपने बलबूते एक रणनीति अवश्य तैयार करनी चाहिए।

जैसाकि मैंने कहा, दोनों रणनीतियां एक दूसरे से जुड़ी हैं। दूसरे की खातिर पहले की अनदेखी नहीं की जा सकती।

इस संदर्भ में, मैं दो महत्वपूर्ण बातों को दोहराना चाहता हूं जो मैंने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूरजकुंड बैठक में स्पष्ट रुप से कहे थे।

सबसे पहले, हमें सुशासन और विकास का एक एजेंडा तेजी से तैयार करना चाहिए जिसमें (1) अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए सरकार के अच्छे कार्यो (2) पंजाब और बिहार सहित भाजपा/एनडीए सरकारों का प्रभावशाली प्रदर्शन (3) कुछ नवीन

भारत की प्रगति में ठहराव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। सरकार मंहगाई पर अंकुश लगाने में पूरी तरह विफल रही है। इसके विपरीत प्रत्येक नये नीतिगत फैसले खाद्य मुद्रास्फीति को बढ़ा रहे है और अन्य आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के दाम बढ़ रहे हैं। राज्य सरकारों के साथ केन्द्र के संबंध कभी इतने खराब नहीं रहे।

और नई खोज वाली योजनाओं को शामिल किया जाएं जो लोगों की आकांक्षाओं और कल्पनाओं पर खरी उतरती हों।

दूसरा, भाजपा को विश्वास के साथ अपना दृढ़ मत व्यक्त करना चाहिए कि हम बिना किसी भेदभाव के समान रुप से समाज के प्रत्येक वर्ग की चिंता करते हैं चाहे वह किसी भी धर्म और जाति का हो।

हमारे प्रमुख विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय हमेशा इस बात पर जोर देते रहे कि हमारे लिए हिन्दुत्व, भारतीयता और भारतीय होना समानार्थक हैं। हमारी भारतीय नागरिकता सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है।

पंडित नेहरु जनसंघ की साम्प्रदायिक सोच की अक्सर आलोचना करते थे। लेकिन अक्तूबर 1961 में मदुरै में एआईसीसी के अधिवेशन में पंडितजी के भाषण के कुछ अंश मैं यहां उद्धृत करना चाहूंगा जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति की चर्चा की थी और उसे '' रेशम सा मुलायम बंधन जो हमें अनेक तरीकों से जोड़े रहता है'' बताया था।

अपने मदुरै भाषण में, प्रधानमंत्री नेहरु ने कहा था :

''भारत जमाने से तीर्थ यात्राओं का देश रहा है। पूरे देश में आपको बद्रीनाथ, केदारनाथ और अमरनाथ के बर्फीले इलाकों से लेकर नीचे दक्षिण में कन्याकुमारी तक प्राचीन स्थल मिलेंगे। इन तीर्थयात्राओं में कौन सी चीज हमारे लोगों को दक्षिण से उत्तर में और उत्तर से दक्षिण की तरफ खींचती होगी ?

यह एक देश और एक संस्कृति की भावना है जो इस भावना ने हम सभी को बांधकर रखा है। हमारी प्राचीन पुस्तकों में कहा गया है कि भारत भूमि उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण के इलाकों तक है। एक महान भूमि के रुप में भारत की यह अवधारणा जिसे लोग पवित्र भूमि मानते हैं, बरसों से बनी हुई है और इसने हमें एकसाथ जोड़ा है, चाहे हमारे अलग-अलग राजनैतिक साम्राज्य हैं और चाहे हम अलग-अलग भाषा बोलते हैं। इस रेशम से मुलायम बंधन ने हमें अनेक तरीकों से बांधकर रखा है।''

मेरा मानना है कि भाजपा और अल्पसंख्यकों के बीच पारस्परिक समीकरण बदलने चाहिए ताकि भारत के लोकतंत्र, विकास और राष्ट्रीय एकीकरण में मौलिक बदलाव लाया जा सके।

मेरा मानना है कि भाजपा और अल्पसंख्यकों के बीच पारस्परिक समीकरण बदलने चाहिए ताकि भारत के लोकतंत्र, विकास और राष्ट्रीय एकीकरण में मौलिक बदलाव लाया जा सके। भाजपा को अपने सुशासन और विकास के एजेंडा में अल्पसंख्यकों के प्रति वचनबद्धता के चार्टर को शामिल करने सहित इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

भाजपा को अपने सुशासन और विकास के एजेंडा में अल्पसंख्यकों के प्रति वचनबद्धता के चार्टर को शामिल करने सहित इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

मुझे यकीन है कि हम इस प्रयास में सफल होंगे। गोवा में हम ईसाई समुदाय के बड़े वर्ग के दिलों को जीतने में सफल रहे। हमने अपने विरोधियों के इस दुष्प्रचार को धाराशायी कर दिया कि भाजपा अल्पसंख्यकों की शत्रु है। गोवा में हाल के चुनावों में भाजपा की शानदार विजय एक असाधारण उपलब्धि है।

मुझे इस संदर्भ में यह जानकर खुशी हुई हैं कि बड़ी संख्या में मुस्लिम नेताओं ने कांग्रेस पार्टी के खुद ब खुद किये जा रहे दुष्प्रचार के स्वभाव को समझना शुरु कर दिया है। इसका एक अच्छा उदाहरण जमायत उलेमा-ए-हिंद के नेता महमूद मदनी की हाल की टिप्पणी है जिसमें उन्होंने गुजरात में भाजपा सरकार के कामकाज की प्रशंसा की है।

जामनगर में सलाया एक छोटा सा मुस्लिम बहुल आबादी वाला कस्बा है। गुजरात नगर निगम के चुनावों में पिछले महीने यहां भाजपा को सुखद आश्चर्य हुआ। 25 वर्ष में पहली बार कांग्रेस को सत्ता से खदेड़ दिया गया। नगर निगम की सभी 27 सीटों पर भाजपा ने विजय हासिल की। इन विजयी उम्मीदवारों में 24 मुसलमान हैं।

अनेक विदेशी सरकारों ने भी गुजरात सरकार और मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अपनी सोच बदली है। एक ऐसे राजनीतिज्ञ, जिन्हें आजाद भारत के इतिहास में अनुचित तरीके से बदनाम करके उनकी छवि को खराब किया गया।

भाजपा के लिए यह अच्छा शगुन साबित हुआ।

और इन सब बातों ने मुझे यकीन दिलाया कि देश के राजनैतिक माहौल को निर्णायक तरीके से कांग्रेस से भाजपा के नेतृत्व वाले विकल्प के पक्ष में बदला जा सकता है। आइए हम आने वाले महीनों में इस दिशा में अधिक निर्णायक तरीके से आगे बढ़ें।

आइए भारत की जनता को एक कड़ा और विश्वसनीय संदेश दें कि भाजपा अपना काम करने में विफल रहे यूपीए के स्थान पर स्थिर, दूरदर्शितापूर्ण और बदलाव के विकल्प की उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए खड़ी होने को तैयार है।

वंदे मातरम। ●

भाजपा मात्र राजनैतिक दल नहीं अपितु एक जनांदोलन है

– प्रभात झा

भारतीय राजनीति में इस आशय का वस्तुनिष्ठ प्रश्न कोई पूछे, ''देश में कौन सा राजनीतिक दल है जो अपने जन्म से लेकर अभी तक न टूटा, न बंटा, न बिखरा'' एक स्वर से सब कहेंगे- भारतीय जनता पार्टी। यह सामान्य गौरव की बात नहीं है। 21 अक्टूबर 1951 से लेकर भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय विचारधारा की अखंड ज्योति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जलाई थी, वह राष्ट्रीय विचार और उसकी अखंड ज्योति आज भी भारतीय समाज को प्रकाशमय करने में लगी हुई है। भाजपा को बने 33 वर्ष हो गए। गत 8 वर्ष से अटलजी अस्वस्थ हैं। भारतीय राजनीति अस्थिरता, अराजकता और उच्छृंखलता के दौर से गुजर रही है। ऐसे में 6 अप्रैल 2013 का महत्व भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए स्वत: ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

पार्टी और सत्ता दो अलग-अलग शब्द हैं। और दोनों के मायने भी अलग-अलग हैं। दल का स्वभाव अलग होता है सत्ता का स्वभाव अलग। दल में सभी कार्यकर्ताओं का अधिकतम अधिकार होता है। सत्ता में कुछ लोगों के पास अधिकतम अधिकार होता है। दल के विस्तार से और दल के कर्तृत्व से जहां नेतृत्व उभरता है वहीं सत्ता भी आती है। दुनिया का राजनैतिक इतिहास पढ़ने, देखने और सुनने के बाद कहीं ऐसा अनुभव नहीं आया कि सत्ता से दल का विस्तार हुआ हो। दल से सत्ता और सत्ता के माध्यम से विचारधारा को समाज के बीच साकार करने का प्रयत्न तो देखा गया और ऐसा होता है और होना भी यही चाहिए। भारतीय राजनीति की महती आवश्यकता है एक ऐसे पाठ्यक्रम की जो विपक्षी दल और सत्ता दल दोनों के लिए बने। भारतीय राजनीति का कोई पाठ्यक्रम नहीं है। विपक्ष में हैं तो पता नहीं क्या करना? और सत्ता में हैं तो भी पता नहीं, दल को क्या करना? जब दल विपक्ष में रहता है तो आंदोलनों के अनेक स्वरूप के माध्यम से वह अपना जनधर्म निभाता है। परन्तु वही विपक्षी दल जब सत्ता में आता है, उस दल के पास दल के नाते कोई कार्य-योजना नहीं होती, और यही वजह है कि सत्ता धीरे-धीरे दल को पीछे-करती जाती है।

अत: भारतीय राजनीति को उसके दायित्व की प्रकृति के अनुसार पाठ्यक्रम होना अनिवार्य सा लगता है। 65 वर्ष की आजादी और राजनीति का कोई पाठ्यक्रम नहीं, राजनीति की यह अनाथावस्था राजनीति के लिए 'दीए' का काम नहीं करेगा।

एक-दूसरे को समझना नितांत जरूरी

हम राजनीतिक दल हैं। अपने को दूसरों से अलग कहते हैं। ऐसा क्यों कहते हैं? इसका जवाब जनता चाहती है। आप कहेंगे नहीं तो जनता पूछेगी नहीं? हम कहते हैं कि हम ''पार्टी विद ए डिफरेंस'' हैं तो लोगों को हम स्वयं अधिकार देते हैं पूछने का। हम अलग इसी मायने में हैं कि हम कार्यकर्ता पद से नहीं विचार से जुड़े हुए हैं। रक्त से नहीं विचार से सहोदर हैं। हम एक-दूसरे के पूरक है। हमारा गोत्र-राष्ट्रीयता है। हमने एक-दूसरे को समझना बंद कर दिया है। आपस में न खिलकर हंसते हैं और न खुलकर बोलते हैं। मंद-मंद मुसकाना तो दूर हम दिनभर गिद्ध की तरह उन्हें ही नोचते रहते हैं जिनके बीच हम काम करते हैं। सद्भावना और सद्विश्वास सहकार्य से बढ़ता है। सामूहिकता में ईश्वर का दर्शन होता है। हम जिनके बीच मे काम करते हैं हमें उन्हें और उन्हें हमें फौरी तौर पर नहीं, पारिवारिक तौर पर समझना होगा। दुनिया

पार्टी और सत्ता दो अलग-अलग शब्द हैं। और दोनों के मायने भी अलग-अलग हैं। दल का स्वभाव अलग होता है सत्ता का स्वभाव अलग। दल में सभी कार्यकर्ताओं का अधिकतम अधिकार होता है। सत्ता में कुछ लोगों के पास अधिकतम अधिकार होता है। दल के विस्तार से और दल के कर्तृत्व से जहां नेतृत्व उभरता है वहीं सत्ता भी आती है। दुनिया का राजनैतिक इतिहास पढ़ने, देखने और सुनने के बाद कहीं ऐसा अनुभव नहीं आया कि सत्ता से दल का विस्तार हुआ हो। दल से सत्ता और सत्ता के माध्यम से विचारधारा को समाज के बीच साकार करने का प्रयत्न तो देखा गया और ऐसा होता है और होना भी यही चाहिए।

चांद पर चली जाय पर मानवीय संगठन तो मानवीय गुणों से चला है, चल रहा है और चलेगा।

परिश्रम की पराकाष्ठा

पद मिले तो परिश्रम की पराकाष्ठा करेंगे। पहचान मिले तो मेहनत करेंगे। इसे प्रतिबद्धता नहीं कहते। भारतीय राजनीति में जो जबर्दस्त कमी आ रही है वह प्रतिबद्धता की है। प्रतिबद्धता का निजबद्धता में, विचारबद्धता का स्वबद्धता में परिवर्तित होना राजनीति को कमजोर करता है। हम मन से काम करते हैं। दबाव, प्रभाव, अभाव के कारण नहीं। हमने स्वयं राष्ट्रसेवा की प्रतिज्ञा ली है। अत: कर्त्तव्यबोध से हम विमुख नहीं हो सकते। हम सदस्य हैं तो हमें परिश्रम करना ही होगा। सब के साथ चलना ही होगा। दुख-सुख का भागीदार बनना होगा। अपेक्षा और उपकार इन दो शब्दों से दूर रहना होगा। ऐसा कहना और सोचना आसान है पर व्यवहार में कठिन तो हो सकता है पर असंभव नहीं। वहीं परिश्रम की पूजा भी होनी चाहिए जो कार्यकर्ता प्रतिबद्धता से परिश्रम करते हैं। उन्हें नकारा भी नहीं जाना चाहिए। कार्यकर्ता का परिश्रम ही सत्ता की सीढ़ी तक दल को ले जाता है। परिश्रम की उपेक्षा कभी नहीं होनी चाहिए।

संकल्प, विकल्प और आंकलन

कार्यकर्ता को संकल्परहित नहीं होना चाहिए। जीवन संकल्पयुक्त होना चाहिए। संकल्प वही ले सकता है जिसमें विकल्प खड़ा करने की ताकत हो। विकल्प भी एक संकल्प ही है। संकल्प स्वयं का नहीं, विचार का और राष्ट्र का होना चाहिए। और इन संकल्पों को पूरा करने में जो कार्यकर्ता अहर्निश कार्य में लगे रहते हैं उनके आंकलन की पद्धति भी दल में होना चाहिए। भारतीय राजनीति में आंकलन पद्धति कमजोर पड़ती जा रही है। कहीं ऐसा न हो कि परिश्रम को परिक्रमा निगल जाए। जब आंकलन की व्यवस्था होती है तो परिश्रम की अनदेखी नहीं होती। आंकलन कार्य का, कार्यक्रमों का, कार्यकर्ता का, नेतृत्व का हर चीज का होते रहना चाहिए। अपना मूल्यन और अवमूल्यन का यदि आंकलन होता रहे तो हम समाज में कभी उपेक्षित नहीं हो सकते। आंकलन रहित व्यवस्थाओं के कारण अव्यवस्थाएं जन्म लेती हैं जो बाद में समेटी नहीं जा पाती।

पूछ-परख और देख-रेख

दल में आज जो व्यवस्था है, कल नहीं रहेगी, जो कल रहेगी वो परसों नहीं रहेगी। दल कार्य में परिवर्तन एक अवश्यंभावी गतिविधि है जो सदैव से चली आ रही है। राजनीति में अधिकार लक्ष्मी की तरह चंचला है। वह किसी एक के पास कभी नहीं रहती। कुछ समय कुछ के पास और कुछ समय कहीं और। यह कोई नई बात नहीं है, यह सभी लोग जानते हैं। इसी में आपसी सद्भाव, मनुष्यता, परिवर्तन के दौरान होने वाली हलचल को समझना। स्वयं पर नियंत्रण ज्यादा महत्वपूर्ण होता है किसी और पर नियंत्रण करने से। वर्तमान राजनीति में लोग नियंत्रण करना चाहते हैं नियंत्रित रहना नहीं। कुछ जगह तो ऐसा हो गया है जहां लोग नियंत्रण नहीं अतिक्रमण करना चाहते हैं, ऐसी राजनीति की उम्र लंबी नहीं होती।

हम जिन कारणों से बढ़े, उसे छोड़ें नहीं

भारतीय जनसंघ और वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी का विस्तार जिन कारणों से हुआ है उसमें सबसे प्रमुख है राष्ट्रवाद। कार्य में लक्ष्य की स्पष्टता, आपसी सद्भावना, आपसी सदाशयता, सामूहिकता, पद से नहीं, प्रतिष्ठा से प्यार, कार्यकर्ता का कष्ट मेरा कष्ट है, की भावना से निरंतर कार्य में लगे रहना, यही कुछ कारण है जिसने हमें कालांतर में भारत की क्रमांक एक की पार्टी बना दिया। उदारता से बड़ी कोई पूंजी नहीं होती। संकीर्णता जहर है। उदारता आकाश की उदात्तता की ओर ले जाती है। संकीर्णता स्वयं ही मनुष्य को घुट-घुट कर मार देती है। भारतीय राजनीति से उदारता का निरंतर लुप्त होना और संकीर्णता का द्रुत गति से बढ़ना घातक परिणाम दे रहा है। भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व सदैव उदारता के कारण ही पहचाना जाता रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति में उदारता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। वहीं नेतृत्व का सहयोगी कैसा होना चाहिए, उसके सशक्त हस्ताक्षर श्री लालकृष्ण आडवाणी हैं। एक ही दल के कार्यकर्ताओं में मित्रभाव का होना प्रकृति प्रदत्त प्रसाद की तरह होना चाहिए, प्रायोजित नहीं। भारतीय राजनीति में

कार्यकर्ता को संकल्परहित नहीं होना चाहिए। जीवन संकल्पयुक्त होना चाहिए। संकल्प वही ले सकता है जिसमें विकल्प खड़ा करने की ताकत हो। विकल्प भी एक संकल्प ही है। संकल्प स्वयं का नहीं, विचार का और राष्ट्र का होना चाहिए। और इन संकल्पों को पूरा करने में जो कार्यकर्ता अहर्निश कार्य में लगे रहते हैं उनके आंकलन की पद्धति भी दल में होना चाहिए। भारतीय राजनीति में आंकलन पद्धति कमजोर पड़ती जा रही है। कहीं ऐसा न हो कि परिश्रम को परिक्रमा निगल जाए। जब आंकलन की व्यवस्था होती है तो परिश्रम की अनदेखी नहीं होती।

राजनीतिक समझ और राजनैतिक सूझबूझ की निरंतर कमी आ रही है, लोग राजनीति करते हैं पर समझ नहीं रखते। राजनीति अपनों के लिए नहीं और अपनों से नहीं, हमें राजनीति विचारधारा के प्रसार के लिए प्रतिद्वंद्वी दलों से करनी है। राजनीति में मानव संसाधन और मानवीय ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रत्येक कार्यकर्ता की ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगे इसी चिंता भी सामूहिक तौर पर होते रहना चाहिए।

तरूणों की तरूणाई को काम में लगाना चाहिए और अनुभवी आंखों का सम्मान भी होना चाहिए। जब हम कहते हैं कि हमारा आज का विरोधी कल का समर्थक है तो फिर अपने दल में तो अपना कोई विरोधी होना ही नहीं चाहिए। जो विरोधी दल में है उन्हें अपना बनाने का प्रयत्न सतत् जारी रखना चाहिए।

दल के अतीत और उसके गौरव का अध्ययन सतत् करना चाहिए। जनसंघ की स्थाना क्यों हुई? जनता पार्टी क्यों बनी? जनसंघ को समाप्त क्यों किया गया? जनता पार्टी से जनसंघ अलग क्यों हुआ? भाजपा की स्थापना किन परिस्थितियों में हुई। हमारी राजनीतिक विचारयात्रा के मुख्य पड़ाव क्या-क्या रहे? संस्थापक कौन थे? नींव में किन-किन ने आहुतियां दी? कलश बनकर कौन-कौन उभरे? विपक्ष में रहते हुए भारतीय राजनीति के केन्द्रबिन्दु में और इतना ही नहीं देश की सत्ता पर आरूढ़ होने तक का वृत्तांत हमारी आंखों के सामने सदैव घूमते रहना चाहिए। दधीचि की तरह जिन-जिन विचार मनीषियों ने विचारधारा की फसल को लहलहाने के लिए अपनी हड्डियों को खाद बना डाले, ऐसे सभी महानुभाव के जीवन को भी हमें अपने राजनीतिक पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी एक राजनीतिक दल नहीं बल्कि एक राजनैतिक आंदोलन है। और हम कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि एक आंदोलन के आंदोलनकारी हैं। हमारी आंखों से डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्तित्व, जिनकी एक नहीं अनेक शृंखलाएं हमारे पास हैं, को सदैव स्मरित करते रहना चाहिए। राजनीतिक दल के केन्द्र में कार्यकर्ता से महत्वपूर्ण कोई धुरी नहीं होती। अत: इस 6 अप्रैल पर अगर हम इतना ही कर सकें कि अपने कार्यकर्ताओं को गले लगाकर, उनके साथ मिलजुलकर कार्य करने का संकल्प पूर्व की तरह लिया तो हम अपने लक्ष्य की ओर निश्चित बढेंगे। हम सबका एक ही सपना है-

तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें। ●

संसद में बहस : रेल बजट पर चर्चा

''भारत को समझना है तो रेल में सफर कीजिए''

गत 14 मार्च 2013 को राज्यसभा में रेल बजट पर चर्चा के दौरान श्री प्रभात झा ने तथ्य, तर्क और भावना प्रधान भाषण देते हुए रेल बजट की खामियों को उजागर किया। हम यहां उनके भाषण का सारांश प्रकाशित कर रहे हैं :

बजट का औचित्य तो उसी दिन समाप्त हो गया था, जिस दिन किराया पहले बढ़ा दिया गया था। पिछले नौ वर्षों में चाहे वह आम बजट हो या रेल बजट हो, जितना बड़ा मजाक संप्रग प्रथम और द्वितीय ने किया है, शायद अभी तक किसी ने नहीं किया होगा। अगर आप रेलवे को व्यापारिक संस्थान के रूप में देखेंगे तो यह भारत के साथ न्याय नहीं होगा। भारतीयता का सबसे बड़ा प्रतीक भारतीय रेलवे है। यह पटरियां नहीं हैं, यह भारत के विकास का चक्का है। दुर्भाग्य से आपने जो बजट प्रस्तुत किया है वह आधे भारत का बजट है। जनता को लगा कि यह बजट खानापूर्ति है। हमारे सम्मानित यात्रियों को दी जाने वाली सेवाओं के स्तर में बहुत गिरावट आई है। संसाधनों की बढ़ती तंगी लगातार हमारे लिए समस्या बनी हुई है। 3,587 स्टेशनों पर मूलभूत सुविधाएं जैसे पानी और शौचालय भी पूरी तरह से उपलब्ध नहीं हैं। 43,000 से अधिक सवारी डिब्बे दम तोड़ चुके हैं। 35,000 से अधिक पुल जर्जर हो चुके हैं। आप किसी पर आरोप लगाकार अपने दायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। यह जिम्मेदारी संप्रग सरकार की है। पिछले एक-डेढ़ साल में रेलवे के 1600 कर्मचारी और 1200 से अधिक यात्रियों की मौत हो गयी। इसका जवाब कौन देगा?

मैं इसके लिए सिर्फ मंत्रीजी को नहीं, बल्कि सारी व्यवस्था को दोषी मानता हूं। 32 प्रतिशत गाड़ियों पर पहरेदार नहीं हैं। घोषणा की गई कि मेडिकल कॉलेज खोले जाएंगे। इसमें कोई समस्या नहीं है, लेकिन रेलवे में क्या काम हो रहा है क्या वह आपको पता है? मंत्री जी मेरा निवेदन है कि गाड़ी में एक चिकित्सक भी रखा जाए। इससे बहुत लाभ होगा। भारतीय रेल एक परंपरा है। भारतीय रेल में भारत का दर्शन होता है। यदि हम भारत के दर्द को समझना चाहते हैं तो हमें भारतीय रेल से यात्रा करनी पड़ेगी। इसको राजनीति से ऊपर उठकर देखना चाहिए। यदि भारतीय रेल आह्वान करे, भारतीयता को जगाए, तो भारत जागेगा और भारत की रेल सुधरेगी। फर्स्ट ए.सी. और सेकेंड ए.सी. कोचों की हालत दयनीय है। ●

इटली झुका, पर मनमोहन सरकार की देश-विदेश में किरकिरी हुई

– अम्बा चरण वशिष्ठ

यह बात किसी से छिपी नहीं कि भारत में हर इतालवी नागरिक एक वीवीआईपी होता है। भले ही उसने भारत में कितना ही बड़ा अपराध क्यों न किया हो। इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं बोफोर्स सौदे के बिचौलिये क्वात्रोची और आजकल दो इतालवी नाविक, जिन पर केरल के समुद्री तट पर दो भारतीय मछुआरों की गोली मार कर हत्या करने का मुकद्दमा चल रहा है। इसके विपरीत ऐसे ही संगीन या इससे कम अपराधों के भारतीय मूल के नागरिक जेलों में कई सालों से सड़ रहे हैं।

इस सम्बन्ध में कारणों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है कि कानून-व्यवस्था एक प्रदेश के विशेषाधिकार का मामला होने के बावजूद मनमोहन सरकार इस पर क्यों विशेष रूचि नहीं ले रही है। केन्द्र ने अपनी ही कांग्रेस सरकार पर कई प्रकार का दबाव बनाया पर वह अपने स्टैण्ड पर अड़ी रही ताकि केरल के जिन दो मछुआरों की इन दोनों नाविकों ने हत्या की है, उन्हें न्याय मिले।

मनमोहन सरकार की इन दोनों नाविक बन्धुओं पर विशेष कृपा रही है। पहले तो उन्हें पिछले दिसम्बर में क्रिसमिस के दिनों मौज मनाने के लिये इटली भेज दिया गया। एक-डेढ़ महीने बाद ही उन्हें अपने देश के चुनाव में मतदान करने के लिये एक मास के लिये फिर इटली जाने की इजाजत दे दी। मनमोहन सरकार ने उनकी प्रार्थना पर अदालत में किसी प्रकार का विरोध नहीं किया। भारत में इटली के राजदूत के केवल लिखित आश्वासन पर ही उन्हें जाने दिया गया और किसी प्रकार की एहतिहात की मांग नहीं की गई।

प्राप्त समाचारों के अनुसार इटली के राजदूत ने जानबूझ कर इस तथ्य को सरकार व अदालत से छिपाये रखा कि मताधिकार का प्रयोग करने के लिये इटली की किसी नागरिक को अपने देश लौटने की आवश्यकता नहीं होती और वहां के संविधान के अनुसार वह मतदान के दिन जिस देश में हो वहां के दूतावास में ही अपना मतदान कर सकता है।

उल्लेखनीय बात यह है कि भारत के किसी भी ऐसे नागरिक को जिस पर हत्या जैसे अपराधों पर अदालतों में मुकद्दमा चल रहा हो, उसे कभी भी दशहरा, दीपावली, होली, नवरात्र, रमजान या क्रिसमिस जैसे पर्वों को मनाने के लिये जेल से एक दिन की भी छुटटी नहीं मिल पाती है। न ही कभी किसी अभियुक्त भारतीय नागरिक को दो दिनों के लिये भी अपने मताधिकार का उपयोग करने के लिये अपने गांव या शहर जाने की इजाजत नहीं दी जाती है। यहां तक कि जेल में बन्द लोक सभा या विधान सभा के लिये हमारे निवार्चित जनप्रतिनिधियों को ही ऐसा विशेषाधिकार उपलब्ध किया जाता है।

पहले तो इतालवी सरकार ने अपने इन दो नाविकों को भारत वापस भेजने से इनकार कर दिया। पर जब उच्चतम न्यायालय ने इतालवी सरकार व उसके राजदूत की इस अवज्ञा का सख्त नोटिस लिया और राजदूत के भारत छोड़ने पर रोक लगा दी तो वहां की सरकार की सांस फूल गई। जब उस सरकार को ज्ञान हो गया कि उसके राजदूत द्वारा उच्चतम न्यायालय को दिये गये आश्वासन की अवज्ञा करने पर जेल तक हो सकती है तो मनमोहन सरकार से रास्ता ढूंढ निकालने के लिये बातचीत आरम्भ कर दी। इतालवी सरकार झुकी तो जरूर पर तब जब मनमोहन सरकार की देश-विदेश में किरकिरी हुई।

इतालवी विदेश मन्त्री ने एक पत्रिका को बताया कि यदि उन्होंने यह रवैय्या न अपनाया होता तो वह भारत की मनमोहन सरकार से अपनी शर्तें मनवाने में सफल न हो पाते जिसमें उनके नाविकों को अच्छी जीवन सुविधायें दिये

जाने और दोषी पाये जाने पर फांसी की सजा न दिया जाना शामिल है।

समाचार माध्यमों के अनुसार अच्छी जीवन सुविधाओं का मतलब है सरकारी खर्च पर पूरी सुख-सुविधाओं से लैस एक घर में ही रखा जाना जिसकी निगरानी इताल्वी राजदूत करेंगे। ये सुविधायें हमारे विधायकों व सांसदों को भी उपलब्ध नहीं हैं जो ऐसे ही अपराधों के कारण जेल में बन्द हैं।

इताल्वी नाविक अन्तिम दिन भारत पहुंचे ताकि अदालत के आदेश की कोई अवज्ञा न हो। उन्हें छोड़ने आये वहां के विदेश उपमन्त्री ने भारत सरकार द्वारा दिये गये लिखित आश्वासन को लहराते हुये कहा कि पहले इन दो नाविकों को न लौटाने की धमकी देकर इटली सरकार ने भारत सरकार से वह आश्वासन व रियायतें बटोर ली हैं जो ऐसा स्टैण्ड न लेने पर सम्भव न हो पातीं। यह इटली की कूटनीति व रणनीति की सफलता का ही परिचायक है।

भारत के विदेश मन्त्री श्री सलमान खुर्शीद ने संसद में अपने वक्तव्य में किसी डील (लेददेन समझौते) से इन्कार तो किया पर यह माना है कि इटली को यह आश्वासन दे दिया गया है कि नाविकों को न तो भारत आने पर गिरफ्तार नहीं किया जायेगा और न उन्हें फांसी दी जाएगी। क्योंकि यह दुर्लभतम में दुर्लभ मामले की श्रेणी में नहीं आता है। पर खुर्शीद भूल गये कि वह एक मन्त्री हैं और न्यायाधीश नहीं जो ऐसा फैसला या आश्वासन दे सकें। फिर पिछले ही वर्ष तो प्रधान मन्त्री डा0 मनमोहन सिंह ने न्यायपालिका को कार्यपालिका के अधिकारक्षेत्र पर अतिक्रमण न करने की सलाह दी थी। अब उनकी सरकार ही न्यायपालिका के अधिकारक्षेत्र पर अतिक्रमण कर रही है।

नतमस्तक होने की कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। सरकार ते तो उनके मामले की सुनवाई के लिये केरल की बजाय दिल्ली में ही एक विशेष न्यायालय स्थापित किये जाने के लिये दिल्ली उच्च न्यायालय को लिख भी दिया है। मनमोहन सरकार ने केरल के अपने ही कांग्रेसी मुख्य मन्त्री के विरोध को भी खारिज कर दिया है जिनका तर्क था कि केरल से गवाहों को लाने आदि पर बड़ा खर्च व असुविधा होगी। इटली सरकार को खुश करने के लिये तो यह सब कुछ कोई मायने नहीं रखता है।

देश में सैंकड़ों मामले हैं जिनमें विदेशी मूल के लोग विभिन्न अपराधों के लिये जेलों में बन्द हैं। पर समझ नहीं आता भारत सरकार केवल इटली के ही आरोपियों पर क्यों इतनी मेहरबान है।

सन्तोष की बात तो बस इतनी है कि इन हथकण्डों से अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति में एक भयंकर विस्फोट होने से बचा लिया गया है। पर इसके लिये भारत को बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ी है। ●

(लेखक भाजपा के साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक हैं)

राजस्थान प्रदेश कार्यकारिणी बैठक

''हम राज ही नहीं बदलेंगे-हम सुराज भी लाएंगे''

भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान प्रदेश की श्रीमती वसुंधरा राजे ने केन्द्र और राज्य सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि सत्ता में बने रहने के लिए कांग्रेस किसी भी हद तक जा सकती है। डीएमके के समर्थन वापसी के बाद स्टालिन के घर पर पड़े छापे इसका उदाहरण है। श्रीमती राजे आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए नारा दिया- ''हम राज ही नहीं बदलेंगे-हम सुराज भी लाएंगे।''

भाजपा प्रदेश प्रभारी श्री कप्तान सिंह सोलंकी ने जिलाध्यक्षों की बैठक को संबोधित किया। प्रदेश उपाध्यक्ष श्री अरुण चतुर्वेदी ने मीडिया को बताया कि बैठक में राजनीतिक और आर्थिक प्रस्ताव पारित किए गए। भाजपा नेता श्री गुलाब चंद कटारिया ने राजनीतिक प्रस्ताव रखा तथा श्री राव राजेन्द्र सिंह ने आर्थिक प्रस्ताव रखा।

इस कार्यकारिणी बैठक में राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री सौदान सिंह, प्रदेश प्रभारी श्री कप्तान सिंह सोलंकी, पूर्व विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह, नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचंद कटारिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री किरण माहेश्वरी, राष्ट्रीय मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव, श्री किरीट सोमैया सहित अनेक वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

बिहार से बदलाव की बयार : अरुण जेटली

बिहार का इतिहास बदलने व राज्य को आगे ले जाने में भाजपा महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। लोकसभा चुनाव में एनडीए बिहार में अधिक-से-अधिक सीटें जीते, इसके लिए अभी से कार्यकर्ताओं को जी-जान से जुट जाना होगा। ये बातें 16 मार्च को राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने कहीं। वे भाजपा प्रदेश कार्यसमिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

श्री जेटली ने कहा कि जहां-जहां एनडीए या भाजपा का शासन है, उन राज्यों की विकास दर केंद्र की विकास दर से दोगुना है। केंद्र की सरकार नेतृत्वहीन हो चुकी है। उसकी नीतियां स्पष्ट नहीं हैं. देश की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। कठोर निर्णय लेने की यूपीए सरकार में ताकत नहीं रह गयी है। पूरी दुनिया में आज भारत का कद छोटा हो गया है।

हैदराबाद व श्रीनगर में आतंकी विस्फोट हुए। पाक संसद ने आतंकवादियों को फांसी देने के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित किया. इसके बावजूद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कह रहे हैं कि पाकिस्तान से बातचीत चलती रहनी चाहिए। राज्य सभा में प्रतिपक्ष के नेता ने कहा कि देश की राजनीति करवट ले रही है. ऐसे वक्त में भाजपा कार्यसमिति का महत्व और बढ़ जाता है।

यूपीए सरकार में शामिल दल या उसे समर्थन दे रही पार्टियों के बारे में उन्होंने कहा कि वह प्रवचन तो देती है, पर प्रहार नहीं करती। एक दिन पहले ही डीएमके ने यूपीए को समर्थन वापसी की धमकी दी है। सपा-बसपा भी केंद्र के खिलाफ कठोर भाषण देती हैं, पर सरकार बचाने के लिए वोट देने में सबसे आगे रहती हैं। ऐसे दलों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

एनडीए को अपनी ताकत से केंद्र की यूपीए सरकार को हटाना होगा। यदि हम कोई भूल न करें, तो यूपीए सरकार को सत्ता से बाहर करना मुश्किल काम नहीं है। उन्होंने कहा कि देश एक बार फिर आतंकवाद दौर से गुजर रहा है।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री मंगल पांडेय ने कहा कि बिहार में घुसपैठ के खिलाफ भाजपा का संघर्ष जारी रहेगा। पार्टी राम सेतु के साथ छेड़छाड़ बरदाश्त नहीं करेगी। यूपीए सरकार का संकल्प 'महंगाई, आतंकवाद व भ्रष्टाचार' है, जबकि हमारा संकल्प 'सुशासन' है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार लगातार बिहार की उपेक्षा कर रही है।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी, राजग के प्रदेश संयोजक नंद किशोर यादव, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राधा मोहन सिंह, श्रम मंत्री जनार्दन सिंह सीग्रीवाल, खनन मंत्री सत्यदेव नारायण आर्य, पर्यटन मंत्री सुनील पिंटू, कला-संस्कृति मंत्री सुखदा पांडेय, नगर विकास मंत्री प्रेम कुमार, सांसद शत्रुघ्न सिन्हा आदि मौजूद थे। मंच संचालन प्रो सूरज नंदन मेहता ने किया।

प्रदेश भाजपा की वेबसाइट लांच

प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने प्रदेश भाजपा की वेबसाइट

(डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट बीजेपी बिहार डॉट कॉम) को लांच किया। संजय चौधरी को वेबसाइट का प्रभारी बनाया गया है। प्रदेश अध्यक्ष मंगल पांडेय ने कहा कि इस पर पार्टी के कार्यक्रमों के अलावा संगठन संबंधी जानकारियां भी डाली जायेंगी। श्री जेटली ने वाणिज्य मंच के प्रदेश संयोजक नीरज कुमार की पुस्तक 'नयी पहल-नयी दिशा' व पार्टी की दूसरी पत्रिका 'अपना रास्ता' का विमोचन किया.

बैठक में केंद्र में भाजपा के नेतृत्व में राजग सरकार बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। राजनीतिक प्रस्ताव पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सह विधायक विनोद नारायण झा ने प्रस्तुत किया। ●